जैन बाल गुटका

प्रथम भाग

अथ णमोकार मन्त्र

णमो अरहंताणं णमोसिद्धाणं

णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं

णमोलोए सव्वसाहूणं।

नोट- जिन भाइयों ने जैन ग्रंथ देखे हैं अथवा नवकार माहात्म्य पठ पढ़ा है वह जानते है कि नवकार मंत्र से कितने जीवों को किस-किस प्रकार सिद्धि हुई है सो वह नवकार मंत्र 46 प्रकार के हैं सो उन का कुल खुलासा हाल और उनमें से महाशक्तिवान् 29 नवकार के जैन मंत्र, और इस नवकार मंत्र के अक्षर अक्षर और शब्द शब्द का खुलासेवार अलग अलग एक बहुत बडा अर्थ जैन बालगुट के दूसरे भाग में छपा है जो हमारे यहां से III) में मिलता हैं।

अथ पंच परमेष्ठियों के नाम

अरंहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु।

ॐ अ सि आ उ सा नमः।

नोट - अ सि आ उ सा नाम पंच परमेष्ठी का है इस में अ, अरहन्त का। सि, सिद्ध का, आ आचार्य का, उ उपाध्याय का। सा, साधु का है और ओं बीजा अक्षर है इस में पंचपरमेष्ठी के नाम गर्भित हैं।

अथ - 63 - शलाका पुरूषों के नाम

24 तीर्थंकर 12 चक्रवर्ती 9 नारायण 9 प्रति नारायण 9 बलभद्र यह मिलकर 63 शलाका के पुरुष कहलाते हैं।

अथ - 24 तीर्थंकरों के नाम

1. ऋषभदेव 2. अजितनाथ, 3. सम्भवनाथ, 4. अभिनन्दननाथ, 5. सुमतिनाथ, 6. पद्मप्रभु, 7. सुपार्श्वनाथ, 8. चन्द्रप्रभ 9. पुष्पदन्त 10. शीतलनाथ, 11. श्रेयांसनाथ 12. वासुपूज्य 13. विमलनाथ, 14. अनन्तनाथ, 15. धर्मनाथ 16. शान्तिनाथ, 17. कुन्थुनाथ, 18. अरनाथ, 19. मल्लिनाथ 20. मुनिसुब्रतनाथ 21. नमिनाथ 22. नेमिनाथ, 23. पार्श्वनाथ, 24. वर्द्धमान।

नोट- ऋषभदेव को ऋषभनाथ वृषभनाथ और आदिनाथ भी कहते है, पुष्पदन्त को सुविधिनाथ भी कहते हैं। वर्द्धमान को वीर, महावीर, अतिवीर, और सन्मत भी कहते है।

समझावट - बहुत से पुरुष तीर्थंकरों के नाम के साथ श्री या जी हरफ जोड़कर बोलते हैं जैसे ऋषभदेव को श्रीऋषभदेवजी कहना सो बोलने में तो कुछ दो नहीं, बल्कि इस में उन के नाम का ताज़ीम पाई जाती है परन्तु जाप्य करने में श्री या जी हरगिज नहीं जोडने क्योंकि तीर्थंकरों के नाम एक जातिके मंत्र हैं मंत्रों का हरफ कम या जियादा करके जपना योग्य नहीं, दूसरे जी हरफ हिंदी भाषा है सो भाषा तो अनेक है सो यदि इसी प्रकार हर एक जबानवाले इनके नाम के साथ अपनी भाषा के हरफ जोड़ने लग जावें तो हर एक भाषा में इनके नाम अन्य अन्य प्रकार के हो जावे सो ऐसा करना दूषित है इसलिए श्री और जी हरफ मंत्र जपने में हरगिज़ नहीं जोड़ने।

12 चक्रवर्ती

1. भरतचक्रवर्ती, 2. सगरचक्रवर्ती, 3. मघवाचक्रवर्ती,

4. सनत्कुमारचक्रवर्ती, 5. शांतिनाथचक्रवर्ती, (तीर्थंकर) 6. कुन्थुनाथचक्रवर्ती (तीर्थंकर), 7. अरनाथ चक्रवर्ती (तीर्थंकर), 8. सुभूम चक्रवर्ती, 9. पद्मचक्रवर्ती (महापद्म), 10. हरिषेण चक्रवर्ती, 11. जयसेन चक्रवर्ती, 12. ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती।।

9 नारायण

1. त्रिपृष्ट, 2. द्विपृष्ट, 3. स्वयम्भू, 4. पुरुषोत्तम 5. पुरुषसिंह, 6. पुण्डरीक, 7. दत्त, 8. लक्ष्मण, 9. कृष्ण।

9 प्रतिनारायण

1. अश्वग्रीव, 2. तारक, 3. मेरक, 4. मधु (मधुकैटम), 5. निशुंभ, 6. वली, 7. प्रह्लाद, 8. रावण, 9. जरासंध।

9 बलभद्र

1. अचल, 2. विजय, 3. भद्र, 4. सुप्रभ, 5. सुदर्शन, 6. आनन्द, 7. नंदन (नंद), 8. पद्म (रामचन्द्र), 9. राम (बलभद्र)

अथ 169 पुण्यपुरुषों के नाम

9 – नारद

1. भीम, 2. महाभीम 3. रूद्र, 4. महारूद्र, 5. काल, 6. महाकाल, 7. दुर्मुख, 8. नरकमुख, 9. अधोमुख।

11 – रूद्र

1. भीमवली, 2. जितशत्रु, 3. रूद्र (महादेव), 4. विश्वानल, 5. सुप्रतिष्ठ, 6. अचल, 7. पुण्डरीक, 8. अजितघर,

9. जितनाभि, 10. पीठ, 11. सात्यकि।

14 – कुलकर

1. सीमंकर 2. सन्मति 3. क्षेमंकर 4. क्षेमंधर 5. सीमंकर 6. सीमंधर 7. विमलवाहन 8. चक्षुष्मान् 9. यशस्वी 10. अभिचन्द्र 11. चन्द्राभ 12. मरुदेव 13. प्रसेनजित 14. नाभिराजा।

24 – कामदेव

1. बाहुबली 2. अमिततेज 3. श्रीधर 4. दशभद्र 5. प्रसेनजित 6. चन्द्रवर्ण 7. अग्निमुक्ति 8. सनत्कुमार (चक्रवर्ती) 9. वत्सराज 10. कनकप्रभ 11. सेधवर्ण 12. शांतिनाथ (तीर्थंकर) 13. कुंथुनाथ (तीर्थंकर) 14. अरनाथ (तीर्थंकर) 15. विजयराज 16. श्रीचन्द्र 17. राजानल 18. हनुमान 19. बलगजा 20. वसुदेव 21. प्रधुम्न 22. नागकुमार 23. श्रीपाल 24. जंबूस्वामी।

नोट – 58 नाम तो यह और 63 शलाका पुरुष और चौबीस तीर्थंकरों के 48 माता पिता के नाम जो आगे 24 चित्रों में लिखे हैं इन में मिलाकर यह सब 169 पुण्य पुरुष कहलाते हैं अर्थात् जितने पुण्यवान पुरुष हुए हैं उनमें यह मुख्य गिने जाते हैं।

12 – प्रसिद्ध मनुष्यों के नाम

1. नाभि 2. श्रेयांस 3. बाहुबली 4. भरत 5. रामचन्द्र 6. हनुमान 7. सीता 8. रावण 9. कृष्ण 10. महादेव 11. भीम 12.

पार्श्वनाथ।

नोट - कलकरों में नाभिराजा, दान देने में श्रेंयास राजा, तप करने में बाहुबली एक साल तक कायोत्सर्ग खड़े रहे, भावकी शुद्धता में भरत चक्रवर्ती दीक्षा लेते हुए केवल ज्ञान हुवा बलदेवों में रामचन्द्र, कामदेवों में हनुमान सतियों में सीता, मानियों में रावण, नारायणों में कृष्ण रुद्रों में महादेव, बलवानों में भीम, तीर्थंकरों में पार्श्वनाथ यह पुरुष जगत में बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

5 - तीर्थंकरबालब्रह्मचारी

1. वासुपूज्य 2. मल्लिनाथ 3. नेमिनाथ 4. पार्श्वनाथ 5. वर्द्धमान

नोट - यह बालब्रह्मचारी हुए हैं इन्होनें विवाह नहीं किया राज्य भी नहीं किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली।

3 - तीर्थंकर तीनपदवी के धारी

1. शांन्तिनाथ 2. कुंथुनाथ 3. अरनाथ।

नोट - यह 3 तीर्थंकर चक्रवर्ती और कामदेव भी हुए हैं।

16 - प्रसिद्ध सतियों के नाम

1. ब्राह्मी 2. चंदनबाला 3. राजल 4. कौशल्या 5. मृगावती 6. सीता 7. समुद्रा 8. द्रौपदी 9. सुलसा 10. कुन्ती 11. शीलावती 12. दमयंती 13. चूला 14. प्रभावती 15. शिवा 16. पद्मावती।

नोट - सती तो अंजना रयणमंजूषा मैनासुन्दरी विशल्या आदि अनेक हुई हैं यह उन में 16 मुख्य कहिये महान सती हुई हैं और जो पबित के साथ

जल मरे उसे अन्यमत में सती कहते हैं सो इन सतियों के सतोपन का वह मतलव नहीं समझना, जैनमत में जो जलकर मरे उसे पाप अपघात माना है उस का फल नरक माना है जैनमत में सती शीलवान को कहते हैं जो किसी प्रकार के भय या लोभ वगैरा से अपने शील को न डिगावे जैन मत में उस को सती माना है।

अतीत (भूत) पिछली चौबीसी

1. श्रीनिर्वाण 2. सागर 3. महासाधु 4. विमलप्रभ 5. श्रीधर 6. सुदत्त 7. अमलप्रभ 8. उद्धर 9. अंगिर 10. सन्मति 11. सिन्धुनाथ 12. कुसुमांजलि 13. शिवगण, 14. उत्साह 15. ज्ञानेश्वर 16. परमेश्वर 17. विमलेश्वर 18. यशोधर 19. कृष्णमति 20. ज्ञानमति 21. शुद्धमति 22. श्रीभद्र 23. अतिक्रांत 24. शांन्ति।

अनागत (भविष्यत) (आइन्दा) चौबीसी

1. श्रीमहापद्म, 3 सुरदेव, 3 सुपार्श्व, 4 स्वयंप्रभ, 5 सर्वात्मभूत, 6, श्रीदेव, 7, कुलपुत्र देव, 8 उदंकदेव, 9 प्रोष्ठिलदेव, 10 जयकीर्ति, 11 मुनिसुव्रत, 12 अर, (अमम) 13 निष्पाप, 14 निःकषाय 15 विपुल, 16 निर्मल, 17 चित्रगुप, 18 समाधिगुप्त, 19 स्वयंभू, 20 अनिवृत्त, 21 जयनाथ, 22 श्रीविमल, 23 देवपाल, 24 अनंतवीर्य ।

महाविदेहक्षेत्र के 20 विद्यमान

1 सीमन्धर, 2 युग्मंधर, 3 बाहु, 4 सुबाहु, 5 संजातक, 6 स्वयंप्रभ, 7 वृषभानन, 8 अनंतवीर्य, 9 सूरप्रभ, 10 विशाल

कीर्त्ति, 11 वज्रधर, 12 चन्द्रानन, 13 चन्द्रबाहु, 14 भुजंगम, 15 ईश्वर, 16 नेमप्रभ (नमि) 17 वीरसेन, 18 महाभद्र, 19 देवयश, 20 आजतवीर्य।

24 तीर्थंकरों की 16 जन्म नगरीये।

1,2,4,5,14 की अयोध्या, तीसरे की श्रावस्ती नगरी, छठे की कोशांबी, 23 काशीपुरा 8वें की चन्द्रपुरी 9वें की काकंदी नगरी 10वें की भद्रिकापुरी 11वें की सिंहपुरी 12वें की चम्पापुरी 13वें की कपिला नगरी 15वें की रत्नपुरी 16, 27, 18 का हस्तनापुर 19, 21 की मिथलापुरी 20वें की कुशाग्र नगर या राजगृही 22 वें की शौरीपुर या द्वारिका 24वें की कुण्डलपुर।

नोट - अयोध्या को साकेता श्रावस्ती नगरी को महेट ग्राम। काशी को बनारस। चम्पापुरी को भागलपुर। रत्नपरी को नौराई और शौरीपुर को बटेश्वर भी कहते हैं।

तीर्थंकरों की जन्म नगरियों में फरक

22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म किसी ग्रन्थ में शौरीपुर में और किसी ग्रन्थ में द्वारिकापुरी में 20वें तीर्थंकर का जन्म किसी ग्रन्थ में कुशाग्र नगर में और किसी ग्रन्थ में राजगृही में लिखा है सो इनमें जो फरक है वह केवली जानें।

24 तीर्थंकरों के निर्वाणक्षेत्र

ऋषभदेव का कैलाश, वासुपूज्य का चंपापुरी का बन, नेमिनाथ का गिरनार, वर्द्धमान का पावापुर, बाकी के 20 का

सम्मेद शिखर है।

अथ श्री सम्मेदशिखर जी के दर्शन

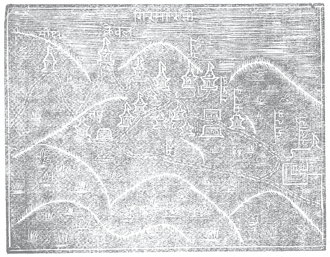

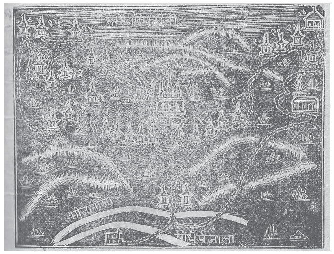

इस श्री सम्मेद शिखर के नकसे में एक तरफ पूर्वदिशा में सबसे उच्ची टोंक नम्बर 1 श्री चन्द्रप्रभु की है दूसरी पश्चिम दिशा में सबसे उच्ची टौंक नम्बर 24 श्री पार्श्वनाथ तीर्थकारों की है इस पर्वत से 20 तीर्थंकर और असंख्यात केवली मोक्ष गये हैं पर्वत पर 24 तीर्थंकरों की चौबीस ही टौंक हैं। यह चौबीस टौंक होने का कारण यह है कि एक कल्पकाल 20 कोटा कोटो सागर का होय है जिस में 20 कोटा कोटो सागर का पहला अवसर्पणी काल 10 कोटा कोटी सागर का दुसरा

उत्सर्पणी काल सो जितने अनंतानंत कल्पकाल गुजर चुके हैं प्रलयकाल के बाद और पर्वतों का यह नियम नहीं कि जहां पहले था वहां ही फिर बने परन्तु यह श्री सम्मेद शिखर हर प्रलय के बाद यहां ही बनता है और चौबीसो इसी से मोक्ष को जाती है इस लिये चौबीसों टौंक ही पूज्नीय हैं।।

जब पहाड़ पर यात्रा करने चढ़ते हैं तो सबसे पहले टौंक 1 श्री कुन्थु नाथ की टौंक पर जाते हैं फिर पूर्वदिशा में दूसरी टौंक श्री नेमिनाथ की हैं, 3 अरनाथ की हैं, 4 मल्लिनाथ की, 5 श्रेयांश नाथ की 6 पुष्पदन्त की, 7 प प्रभु की, 8 मुनि सुब्रत नाथ की 9 चंद्रप्रभु की, 10 आदि नाथ की, 11 शीतल नाथ की ,12 अनंत नाथ की, 13 संभव नाथ की, 14, वासुपूज्य की, 15 अभिनन्दन नाथ की यह, 16 टौंक पूर्वदिशा में हैं फिर बीच में जल मन्दिर है, फिर पश्चिम दिशा में 16 वीं टौंक श्री घर्मनाथ की हैं 17 सुमतिनाथ की 18 शांतिनाथ की 19 महावीर की 20 सुपार्श्वनाथ की 21 विमलनाथ की 22 अजित नाथ की 23 नेमिनाथ की 24 पार्श्वनाथ की यह 1 टौंक 16 से 24 तक पश्चिम दिशा हैं इनका विशेष हाल जैन तीर्थयात्रा में लिखा हैं जो हमारे यहां से 1 रू. में मिलती है।।

अथ श्री गिरिनार जी के दर्शन

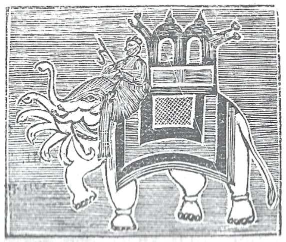

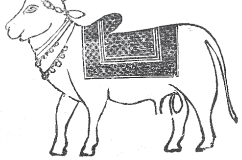

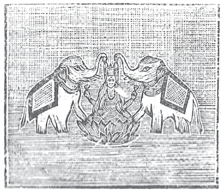

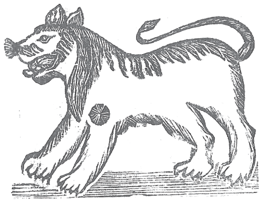

इस श्री गिरनार जी के नक्से में पहले पहाड़ के नीचे ठहरने की धर्मशाला है फिर पहाड़ पर जाने को फाटक यानी दरवाजा हैं फिर उपर चढ़ पहाड़ पर दर्शन करने जाने को दुसरा फाटक यानी दरवाजा है फिर श्वेताम्बरी मंदिर हैं यहां ही राजल की गुफा है यहां राजल जी ने तप किया है यहां से आगे रास्ते में अम्बिका देवी का मंदिर आता है यह इस पहाड़ की रक्षक हैं फिर जाकर श्री नेमिनाथ तीर्थंकर के केवल ज्ञान कल्याणक की टौंक पर पहुंचते हैं इस पर्वत से श्री नेमिनाथ तीर्थंकर आदि 11 करोड़ मुनि मुक्त हये हैं इसका विशेष हाल हमने जैन तीर्थ यात्रा में लिखा हैं श्री गिरनार जी को उर्ज्जयन्त गिर भी कहते हैं ।।

दूसरे सिद्ध के नाम

1 मांगीतुंगी 2 मुक्तागिर (मेढगिरि) 3 सि वरकूट (ओंकार) 4 पात्रागिरि 5 शत्रुंजय (पालीताना) 6 बड़वानी (चूलगिरि) 7 सोनागिरि 8 नैनागिरि (नैनानंद) 9 दौनागिरि

(संदेपा) 10 तारंगा 11 कुंथुगिरि 12 गजपंथ 13 राजगृही (पंचपहाड़ी) 14 गुणावा (नवादा) 15 पटना 16 कोटिशिला 17 चौरासी।।

नोट- इसका मतलब यह नहीं समझना कि इतने ही सिद्धक्षेत्र हैं इसके इलावा और भी बहुत हैं परन्तु कालदोष से यह मालूम नहीं रहा है कि वह कहां है इसलिए 5 तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र और 16 दूसरे जो इस समय प्रसिद्ध हैं वही 21 यहां लिखे हैं निर्वाणकांड रचताने भी जो पाठ रचने के समय आम मशहूर थे उसमें वही वर्णन किए हैं बाकी के सिद्धक्षेत्रों को आखीर में तीन लोक के तीर्थों में नमस्कार करा है।

अतिशय क्षेत्रों के नाम

1. अहिक्षतजी 2 चंदेरी 3 थोवनजी 4 पपोराजी 5 खजराहा 6 कुण्डलपुर 7 वनड़ा 8 अंतरिक्ष पार्श्वनाथ 9 कारंजयजी 10 भातकुली 11 रामटेक 12 आबूजी 13 केसरियानाथ 14 चांदनपुर 15 जैनबद्री 16 कानूरग्राम 17 मूलबद्री 18 कारकूल 19 बारंगनगर 20 चौरासी मथुरा के पास है।

नोट - चौरासी को जम्बूस्वामी का निर्वाण क्षेत्र भी कहते हैं परंतु बाज शास्त्रों में जम्बूस्वामी का निर्वाण राज गृही (पंच पहाड़ी) में लिखा है इस कारण से हमने इसे अतिशय क्षेत्रों में भी लिखा है अहिक्षतजी को रामनगर जैन बद्री को श्रवण बिगलोर या गोमठ स्वामी मूलबद्री को सहस्र कूट, केसरियानाथ को काला बाब चांदनपुर को महावीर भी कहते हैं, यह अतिशय संयुक्त जैन तीर्थ हैं तीर्थ उसे कहते हैं जिस कर भव्य जीव भवसागर कोतिरे इन का विशेष हाल जैनतीर्थ

यात्रा मह।

अथ 24 तीर्थंकरों की माताओं के 16 स्वप्न

(भाषा छंदबन्दपाठ)

सुर कुंजर सम कुंजरधवल धुरंधरो। केहरि केसर शोभित नखशिख सुन्दरो। कमला कलश न्हौन दोउ दामसुवा बने। रवि शशि मण्डल मधुर मीन युगपावने। पावन कनक घट युग्मपूरण कमल सहित सरोवरो। कल्लोल माला कुलितसागर सिंह पीठ मनोहरो। रमणीक अमर विमान फणिपति भवन रवि छवि छाजिये। रूचिरत्न राशि दिपन्त पावक तेजपुञ्जविराजिये।

(संस्कृत)

गजेंद्रवृष सिंहपोत कमलालया दाम क, शशांक रविमीन कुम्भ ननिला कराम्भी निधिं, मृगाधिपधृतासनं सुर विमान नागालयं, मणि प्रचय वन्हि नासह विलोकितं मंगलम्

अथ 28 तीर्थंकरों की माताओं के 16 स्वप्नों के 16 चित्र।

तीर्थंकरों के गर्भ में आने के समय जो उनकी माताओं को 16 स्वप्न दिखाई देते हैं उन 16 स्वप्न के चित्र इस प्रकार है

1. पहले स्वप्ने में श्वेत वर्ण सुर हस्ती दीखे।

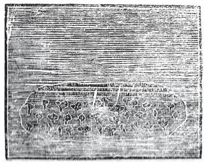

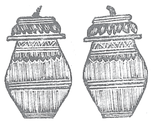

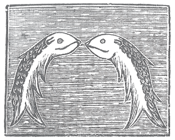

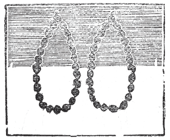

2. दूसरे स्वप्ने में स्वेत वर्ण वल दीखे हैं।

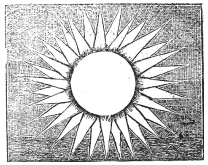

3. तीसरे स्वप्न में श्वेत वर्ण शेर दीखे है।

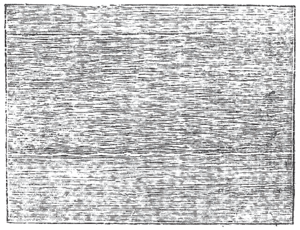

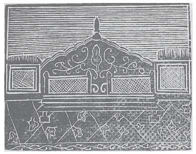

4. चौथे स्वप्ने में हाथियों कर होय है अभिषेक जिसका ऐसी कमलों के सिंहासन पर लक्ष्मी बैठी दीखे है।

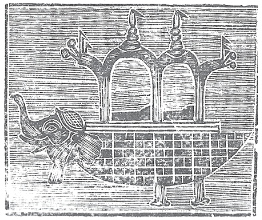

5. पांचवें स्वप्न में आकाश विषे दो फूल माला लटकती हुई दीखें है।

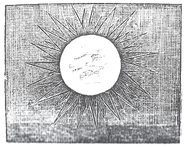

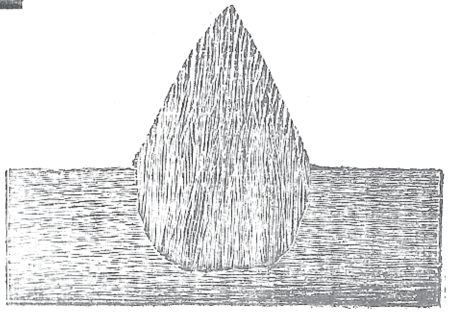

6. छठे स्वप्नों में रात्रा के समय किरणों साहत सम्पूर्ण चन्द्रमा दीखे है।

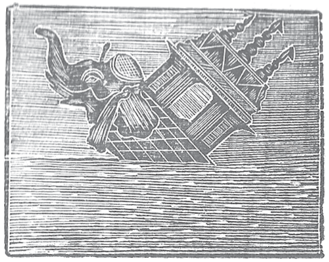

7. सातवें स्वप्ने में जगत को रोशन करता हुवा उदयाचल पर्वत पर उगता हुवा सर्य्य दीखे है।

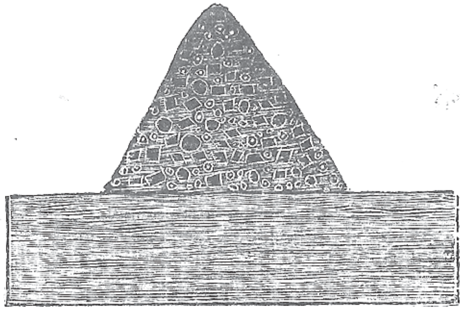

8. आठवें स्वप्न में सरोवर के जल विषे केल करते हुये युगल (दो) मीन (मच्छी) दीखे हैं।

9. नवमें स्वप्ने में सुगंध जल के भरे दो कंचन के कलश जिन के मुख कमल से ढके हुये हें सो दीखे हैं।

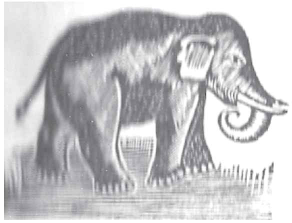

10. दशवें स्वप्ने में महा मनोहर पौडियों सहित स्वच्छ जल से भरा कमलों कर पूर्ण सरोवर दीखे है।

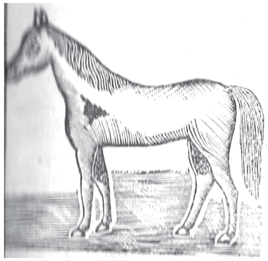

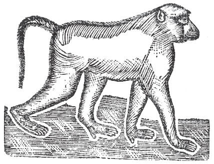

11. ग्यारहवें स्वप्ने में उछलती हुई उंची तरंगों सहित समुद्र दीखे है।

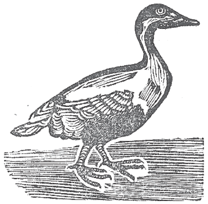

12. बारहवें स्वप्ने में लक्ष्मी का स्थानक महा मनोहर सिंहासन दीखे है।

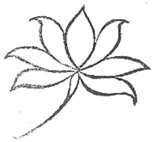

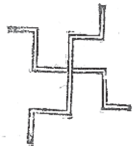

13. तेरहवें स्वप्ने में नाना प्रकार की ध्वजाओं कर

शोभित आकाश विषे आवता हुवा देव विमान दिखे है।

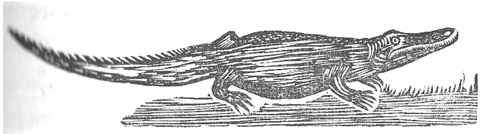

14. चौदहवें स्वप्न में पाताल से निकलता नागेन्द्र का भवन दीखे है।

15. पंदरहवें स्वप्ने में अरूण जे पद्मरागमणि (चुन्नी) (लाल) उज्वल जे वज्रमणि (हीरा) हरित जे मरकत मणि (पन्ना) श्याम जे इन्द्र नीलमणि (नीलम), और पीत जे पुष्प

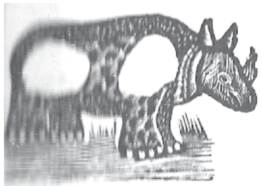

राग मणि (पुषराज), इत्यादि रत्नों की बड़ी ऊंची राशि दीखे है।

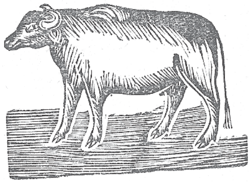

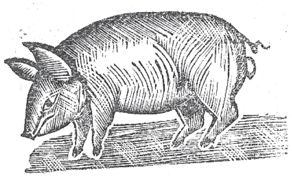

16. सोलहवें स्वप्ने में बलती हुई निर्धूम अग्नि दीखे है।

अथ 28 तीर्थंकरों के 28 चिन्ह

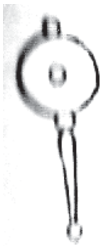

(भाषा छंद बंद पाठ)

दोहा – तीर्थंकर चौबीस के, कहूं चिन्ह चौबीस।
जैनग्रन्थ में वर्णिये, जैसे जैन मुनीस ।

पाद्धडी छंद ।

श्री आदिनाथ कै वैल जान, अजितेश्वर के हाथी महान संभव जिन के घोड़ा अनूप, अभिनंदन के बांदर सरूप। श्री सुमतनाथ के चकवा जान। श्री पद्म प्रभु के कमल मान, सथिया सुपार्श्व के शोभवंत, चंदा के आधा चंद दिपंत। नाकू संयुक्त श्री पुष्प दंत, वृक्ष कलप कहो सीतल महंत, श्रेयांस नाथ के गैंडा देख, श्री वासू पूज्य के भैंसा रेख विमलेश्वर के सूवर बखान, सेही अनंत कै कर प्रमान। श्री धर्मनाथ के वज्र दंड, प्रभु शांतिनाथ के हिरण मंड। कुंथु जिनके बकरा कहंत, मछली का अर प्रभु के लसन्त। श्री मल्लिनाथ के कलसयोग मुनिसुव्रत के कछवा मनोग। चिनकमल श्रीनमिके कहंत, शंख नरोमनाथ के बल अनंत पारस

के सर्प है जग विख्यात, सिंह सोहेवीर के दिवसरात।।

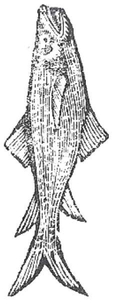

दोहा – चिन्ह बिंबपर देख यह, जानो जिन चौबीस।

पौछी कमंडलु युक्त जे, ते बिंब जैन मुनीस।।

नहीं चिन्ह अरहंत की सिद्ध की कही अकाश।

ज्ञानचंद प्रभुदरस से कटे कर्म की रास।।

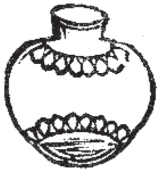

नोट – 24 तीर्थंकरों के 24 चिन्ह जो हमने इस पुस्तक में लिखे हैं इनको सही समझ कर बाकी के लेख भी इसी अनुसार कर देने चाहिये इस का संशोधन हमने संस्कृत प्राकृत ग्रंथों के प्रमाण के साथ किया है।

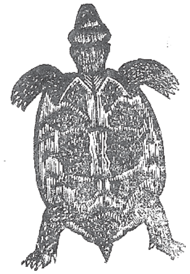

अथ 24 तीर्थंकरों के 24 चिन्हो के 24 चिन्ह

1. ऋषभदेव के बैल का चिन्ह –

पहिला भव सर्वार्थसिद्धि जन्म नगरी अयोध्या पिता नाभिराजा,

मातामरूदेवी, काय ऊंची 500 धनुषरंग स्वर्ण समान पीला आयु 94 लाखू पूर्व दीक्षा बृक्ष बट (बड़ के नीचे दीक्षा ली) गणधर 84 निर्वाण आसन पद्मासन निर्वाण स्थान कैलाश यह तीसरे काल में उत्पन्न भए और तीसरे में ही मोक्ष गए जब यह मोक्ष गए इनसे 3 वर्ष साढे आठ महीने बाद चौथा काल प्रारम्भ हुआ। अंतर इनसे 50 लाख कोटि सागर गए पीछे अजितनाथ भए।।

2. अजितनाथ के हाथी का चिन्ह –

पहिला भव वैजयन्त नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम जित शत्रु माता का नाम विजयसेना देवी काय ऊंची 450 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 42 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष सप्तछद (सितौना) निर्वाणआसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इनसे 30 लाख कोटि सागर गए पीछे संभवनाथ भए।

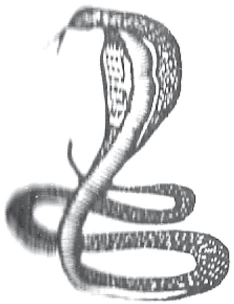

3. संभवनाथ के घोडे का चिन्ह –

पहिला भव ग्रेवेयक जन्मनगरीश्रावस्ती पिता का नाम जितारि माता का नामसुषेणा देवी काय ऊंची 400 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 60 लाख पूर्व दीक्षावृक्ष शाल गणधर

108 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे 10 लाख कोटि सागर गए पीछे अभिनन्दन नाथ भए।।

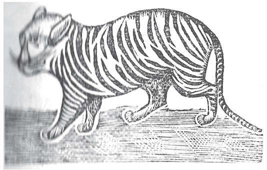

4. अभिनन्दननाथ के बन्दर का चिन्ह –

पहिला भव वैजयंतनामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम संवर माता का नाम सिद्धार्था काय ऊंची 350 धनुष, रंग स्वर्ण समान पीला आयु 40 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष सरल गणधर 103 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे 9 लाख कोटिसागर गए पीछे सुमतिनाथ भए।

5. सुमतिनाथ के चकवे का चिन्ह –

पहिला भव उर्द्धग्रैवेयक जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम मेघप्रभ माता का नाम सुमंगल (मंगलावती) ाकय ऊंची 300 धनुष रंग सुवर्ण समान पीला आयु 40 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष प्रियंगु (कंगुनी) गणधर 116 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इनमें 10 हजार कोटि सागर गए पीछे पद्मप्रभ भए।।

6. पद्मप्रभ के कमल का चिन्ह –

पहिला भव वैजयंत नामा दूसरा अनुत्तर विमान जन्म नगरी कोशाम्बी पिता का नाम धारण माता का नाम सुसीमादेवी काय ऊंची 350 धनुष, रंग कमल समान आरक्त (सुरख) आयु 30 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष प्रियंगु (कंगुनी) गणधर 111 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से 9 हजार कोटि सागर गए पीछे सुपार्श्वनाथ

भए।।

7. सुपार्श्वनाथ के सांथिये का चिन्ह –

पहिला भव मध्यग्रैवेयक जन्म नगरी काशी पिता का नाम सुप्रतिष्ठ माता का नाम पृथिवी (षेणादेवी) काय ऊंची 200 धनुष, रंग प्रियंगु मञ्जरी समान हरा आयु 20 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष शिरीष (सिरस) गणधर 15 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से 9 सौ कोटि सागर गए पीछे चन्द्रप्रभ भए।।

8. चन्द्रप्रभ के अर्धचन्द्र का चिन्ह –

पहिला भव वैजयंत नामा दूसरा अनुत्तर जन्मनगरी चन्द्रपुरी पिता का नाम महासेन माता का नाम लक्ष्मणादेवी काय ऊंची 150 धनुष, रंग श्वेत (सफेद) आयु 10 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष नाग गणधर 93 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इनसे 90 कोटि सागर गए पीछे पुष्पदन्त भए।।

9. पुष्पदन्त के नाकू (संसार) का चिन्ह –

पहिला भव अपराजित नामा चौथा अनुत्तर विमा जन्म नगरी काकन्दी पिता का नाम सुग्रीव माता का नाम जयरामादेवी कार्य ऊंची 100 धनुष रंग श्वेत (सुफैद) आयु 2 लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष शाल, गणधर 88 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदनशिखर, अंतर इनसे 9 कोटि सागर गए पीछे शीतलनाथ भए।।

10. शीतलनाथ के कल्पवृक्ष का चिन्ह –

पहिला भव आरण नामा 15वां स्वर्ग जन्मनगरी भद्रकापुरी पिता का नाम हढरथ माता का नाम सुनन्दा देवी काय ऊंची 90 धनुष, रंग स्वर्ण

समान पीला आयु एक लाख पूर्व दीक्षा वृक्ष प्लक्ष (पिलखन) गणधर 81 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेद शिखर अंतर इनसे 100 सागर घाट कोटि सागर गए पीछे श्रेयांसनाथ भए।

11. श्रेयांसनाथ के गैंडे का चिन्ह –

पहिला भव पुपोत्तर विमान जन्म नगरी सिंहपुरी पिता का नाम विष्णु माता का नाम विष्णुश्री काय ऊंची 80 धनुष, रंग स्वर्ण समान पीला, आयु 84 लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष तिंदुक गणधर 77 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे 54 सागर गए पीछे वासुपूज्य भए।।

12. वासूपूज्य के भसे का चिन्ह –

पहिला भव कापिष्ठ नामा आठवां स्र्व जन्म नगरी चंपापुरी पिता का नाम वासु माता का नाम विजया (जयवती देवी) काय ऊंची 70 धनुष रंग केसूके फूल समान आरक्त (सुरख) आयु 72 लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष पाटल गणधर 66 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान चम्पापुरी का बन अन्तर इनसे 30 सागर गए पीछे विमल नाथ भए। वासुपूज्य बालब्रह्मचारी भए न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली।

13. विमलनाथ के सुवर का चिन्ह –

पहिला भव शुक्रनामा 9 वां स्वर्ग जन्म नगरी कपिला पिता का नाम कृतवर्मा माता का नाम सुरभ्या (जय भामा देवी काय ऊंची 80 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 60 लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष जम्बू (जामन) गणधर 44 निर्वाण आसन खडगासन निर्वाण स्थान सम्मेद शिखर,

अन्तर इनसे 9 सागर गए पीछे अनंतनाथ भए।

14. अनंतनाथ के सेही का चिन्ह –

पहिला भव सहस्रार नामा 12वां स्वर्ग जन्म नगरी अयोध्या पिता का नाम सिंहसेन माता का नाम सर्वयशा (जयश्यामादेवी) काय ऊंची 80 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 30 लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष पीला गणधर 50 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इन से 4 सागर गए पीछे धर्मनाथ भए।

15. धर्मनाथ के वज्रदण्डका चिन्ह –

पहिला भव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी रत्नपुरी पिता का नाम भानु माता का नाम सुप्रभा देवी। काय ऊंची 45 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 10 लाख वर्ष दीक्षा वृक्ष दधिपर्ण, गणधर 43 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इन से पौणपल्य घाट तीन सागर गए पीछे शांतिनाथ भए।

16. शान्तिनाथ के हिरण का चिन्ह –

पहिला भव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी हस्तनापुर पिता का नाम विश्वसेन माता का नाम ऐरा देवी (अजिता रानी) काय ऊंची 40 धनुषरंग स्वर्ण समान पीला आयु एक लाख वर्ष दीक्षा वृक्षनंदी गणधर 36 निर्वाण आसन खड्गासन निर्वाण स्थान सम्मेद शिखर, अन्तर इनसे आध पल्य गये पीछे कुन्थुनाथ भये। शांतिनाथ तीर्थंकर चक्रवर्ती और काम देव तीन पदवी के धारी भये।

17. कुन्थुनाथ के बकरे का चिन्ह –

पहिला भव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी हस्तनापुर पिता का नाम सूर्य्य

माता का नाम श्रीकांता देवी, काय ऊंची 35 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 65 हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष तिलक गणधर 35 निर्वाण आसन खडगासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे छै हजार कोटिवर्ष घाट पावपल्य गए पीछे अरनाथ भये।

नोट - कुंथुनाथ तीर्थंकर चक्रवर्ती और काम देवी तीन पदवी के धारी भये।

18. अरनाथ के मछली का चिन्ह -

पहिला भव सर्वार्थसिद्धि जन्म नगरी हस्नापुंर पिता का नाम सुदर्शन माता का नाम मित्रसेनादेवी काय ऊंची 30 धनुष रंग स्वर्ण समान पीला आयु 84 हजार वर्ष दीक्षावृक्ष आम्र (आम) गणधर 30 निर्वाण आसन खड़गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अंतर इनसे पैसठ लाख चौरासी हजार वर्ष घाट हमार कोटि वर्ष गये मल्लिनाथ भये।

नोट - अरनाथ तीर्थंकर चक्रवर्ती और कामदेव तीन पदवी के धारी भये।

19. मल्लिनाथ के कलश का चिन्ह -

पहिला भव विजय नाम पहिला अनुसार विमान जन्म नगरी मिथिलापुरी पिता का नाम कुम्भ माता का नाम प्रजावतों काय ऊंचो 25 धनुष रंग स्वर्ण समान पोला आय 55 हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष अशोक गणधर 28 निर्वाण आसन खड़गासन निर्वाण स्थान सम्प्रेदशिखर अन्तर इनके पीछे 54 लाख वर्ष गये श्री मुनि सुब्रतनाथ भये।

नोट - मल्लिनाथ बालब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली।।

20. मुनिसुव्रतनाथ के कछवे का चिन्ह -

पहिला भव अपराजित नामा चौथा अनुतर विमान जन्म नगरी कुशाग्रनगर अथवा राज्यग्रही पिता का नाम सुमित्र माता का नाम पद्मावती (सोमानामा देवी) काय ऊंची 20 धनुष रंग अञ्जन गिरि (सुरमे का पहाड़) समान श्याम आयु 30 हजार वर्ष दीक्षावृक्ष चंपक (चंवेली) गणघर 18 निर्वाण आसन खड़गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर अन्तर इनके पीछे 6 लाख वर्ष गये नेमिनाथ भये।

21. नेमिनाथ के कमल का चिन्ह -

पहिला भव प्राणत नामा 14 वां स्वर्ग जन्म नगरी मिथिलापुरी पिता का नाम विजय माता का नाम वप्रा काय ऊंची 25 धनु रंग स्वर्ण समान पीला आयु 10 हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष बौल श्री गणधर 17 निर्वाण आसन खड़ागासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर अन्तर इनको लाख वर्ष गये पीछे नेमिनाथ भये ।

22. नेमिनाथ के शंख का चिन्ह -

पहिला भव वैजयंत नामा दुसरा अनुतर विमान जन्म नगरी शोरीपुर वा द्वारका पिता का नाम समुद्रविजय माता का नाम शिवा देवी काय ऊंची 10 धनुष रंग मोर के कंठ समान श्याम आयु 1 हजार वर्ष दीक्षा वृक्ष मेषशृंग, गणधर 11 निर्वाणआसन खड़गासन निर्वाण स्थान गिरिनार पर्वत अन्तर इनसे पौने चौरासी हजार वर्ष गये पीछे पार्श्वनाथ भये।।

नोट - नेमिनाथ बाल ब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली।

23. पार्श्वनाथ के सर्प का चिन्ह -

पहिला भव आनत नामा 13 वां स्वर्ग जन्म नगरी काशी पुरी पिता का नाम अश्वसेन माता का नाम वामा काय ऊंची 9 हाथ रंग काचीशालि (हरेधान) समान हरा आयु सौ वर्ष, दीक्षा वृक्ष धवल गणधर 10 निर्वाण आसनखड़गासन निर्वाण स्थान सम्मेदशिखर, अन्तर इनसे अढाई सौ वर्ष गये पीछे वर्द्धमान भये।

नोट – पार्श्वनाथ बालब्रह्मचारी भये न विवाहह किया न राज्य किया, कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली ।।

24 – महाबीर के शेर का चिन्ह –

पहिलाभव पुष्पोत्तर विमान जन्म नगरी कुण्डलपुर पिता का नाम सिद्धार्थ माता का नाम प्रियकारिणी (त्रसला) काय ऊंची 7 हाथ, रंग स्वर्ण समान पीला आयु 42 वर्ष दीक्षा वृक्ष शाल गणधर 11 निर्वाण आसन खड़ा गासन निर्वाण स्थानपावापुर।

यह बाल ब्रह्मचारी भये न विवाह किया न राज्य किया कुमार अवस्था में ही दीक्षा ली जब यह मोक्ष गये तब चौथे काल के तीन वर्ष साढे आठ महीने बाकी रहे थे।

अथ बच्चों के याद करने की नामावली

निम्नलिखित नाम बच्चों को याद कर लेने चाहिये।

9 निधि –

1. काल, 2 महाकाल, 3 पांडुक, 4. मानवाख्य, 5 नैसर्पाख्य, 6. सर्वरत्नाख्य, 7. शंख, 8. पद्म, 9. पिंगलाख्य ।।

14 रत्न –

1. सुदर्शन चक्र, 2. सुनंदखड़ग, 3 दंड, 4. चमर, 5 छत्र, 6. चूड़ामणि, 7 सेनापति, 8. चिंतामणि कांकणी, 9, अंजिकजयअश्व, 10 विजयार्ध पर्वतगज, 11. भजकुंडस्थापित, 12. विद्यासागर पुरोहित 13. कामबृद्धि, 14 सुभद्रानामक स्त्री ।

10 कल्पवृक्ष –

1. मद्यांग, 2 तुर्याङ्ग, 3. भूषणांग, 4. कुसुमांग, 5. दीप्त्यांग, 6. ज्योति रंग, 7. गृहांग, 8 भोजनांग, 9. भाजनांग, 10. वस्त्रांग ।

8 द्वीप –

1. जम्बूद्वीप, 2. धातु का द्वीप, 3. पुष्करवरद्वीप, 4. वारुणीवर द्वीप, 5. क्षीरवरद्वीप, 6. घृतवरद्वीप, 7. इक्षुवर द्वीप, 8. नन्दीश्वर द्वीप ।

7 क्षेत्र –

1. भरत, 2. हैमवत, 3. हरिक्षेत्र, 4. विदेहक्षेत्र, 5.रम्यक्क्षेत्र, 6. ऐरण्यवत्क्षेत्र, 7. ऐरावत क्षेत्र ।

14 नदियां –

1.गंगा, 2. सिंधु, 3. रोहित, 4. रोहितास्या, 5. हरित 6. हरिकांता, 7. सीता, 8. शीतोदा, 9. नारी, 10 नरकांता, 11 सुवर्णकूला, 12. रूप्य कूला, 13. रक्ता 14 रक्तोदा।

6 कुण्ड (ह्रद)

1. पद्म, 2. महापद्म, 3. तिगिंच्छ, 4. केसरी, 5. महापुण्डरीक 6. पुण्डरीक

7. ईति (आफतें) (मुसीबतें)

1. अतिवृष्टि, 2. अनावृष्टि (वर्षा बिल्कुल न होना) 3. मूसक (अनंत मूसे पैदा होकर तमाम खेती खा जावें) 4. टिड्डी (टिड्डी खेती खा जावें) 5. सूवा (अनंत सूवा पैदा होकर खेती खा जावें) 6. आपका कटक (सेना) 7. परका कटक।

5 अनुत्तर विमान –

विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित, सर्वार्थसिद्धि।

16 स्वर्ग –

1. सौधर्म, 2. ऐशान, 3. सानत्कुमार, 4. माहेन्द्र, 5. ब्रह्म, 6. ब्रह्मोत्तर, 7. लांतव, 8. कापिष्ट, 9. शुक्र, 10. महाशुक्र, 11. सतार, 12 सहस्रार, 13. आनत, 14. प्राणत, 15 आरण, 16. अच्युत ।

7 नरक –

1. रत्नप्रभा (धम्मा), 2. शर्कराप्रभा (वंशा), 3. बालुका प्रभा (मेघा), 4. पंकप्रभा (अंजना), 5. धूमप्रभा (अरिष्टा), 6. तमप्रभा (मघवी), 7. महातम प्रभा (माधवी)।

4 काय के देव –

1. भवनवासी, 2. व्यंतर, 3. ज्योतिषी, 4. वैमानिक

(कल्पवासी) ।

10 प्रकार के भवनवासी देव।

1. असुरकुमार, 2. नागकुमार, 3. विद्युत्कुमार, 4. सुपर्णकुमार, 5. अग्नि कुमार, 6. पवनकुमार, 7. स्तनितकुमार, 8. उदधिकुमार, 9. द्वीप कुमार, 10. दिक्कुमार।

8 प्रकार के व्यंतर देव –

1. किन्नर, 2. किम्पुरूष, 3. महोरग, 4. गंधर्ब, 5. यक्ष, 6. राक्षस, 7. भूत, 8. पिशाच।

5 प्रकार के ज्योतिषी देव।

1. सूर्य, 2. चन्द्रमा, 3. ग्रह, 4 नक्षत्र, 5. तारे।

16 प्रकार के वैमानिक (कल्पवासी) देव।

नोट– इनके वही नाम हैं जो 16 स्वर्गों के हैं।

6. द्रव्य ।

1. जीव 2. अजीव 3. धम 4. अधर्म 5. काल 6.आकाश ।।

पञ्चास्तिकाय ।

छ द्रव्यों में से काल द्रव्य निकाल देने से बाकी के पांचों द्रव्य पंचास्तिकाय कहलाते हैं अर्थात् कालद्रव्य के काय नहीं है बाकी पांचों द्रव्यों के काय हैं।

5. लब्धि ।

क्षयोपशम लब्धि, 2 विशुद्धलब्धि, 3. देशना लब्धि, 4. प्रायोग लब्धि, 5. करण लब्धि ।।

नोट- इन में चार तो हर जीव के हो सकती हैं परन्तु पचंमी करण लब्धि निकट भव्य के ही होय है।।

6 भाषा।

संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाचिक अपभ्रंश ।

2 प्रकार के जीव -

1. संसारी 2. सिद्ध।

नोट- भव्य वह जीव कहलाते हैं जिनमें कर्मो से रहित होकर मुक्ति में जाने की शक्ति है। अभव्य वह जीव कहलाते हैं जिन में मुक्ति में जाने की शक्ति नहीं है और वह कभी मुक्ति में नहीं जावेंगे सदैव संसार में ही जन्म मरण करते रहेंगे।

2 प्रकार के पंचेन्द्रिय जीव -

1. संज्ञी (सैनी) 2. असंज्ञी (असैनी)

नोट - जो पंचेन्द्री जीव मन सहित है वह संज्ञी कहलाते हैं जिन के मन नहीं है वह असंज्ञी कहलाते हैं संज्ञी जीव अपनी माता के गर्भ से पैदा होते हैं असंज्ञी वगैर गर्भ के ही दूसरे कारणों से पैदा होते हैं जिस प्रकार चौमासे में मृतक सांप का शरीर सड़कर उसके आश्रय से अनेक सांप हो जाते हैं इनके मन नहीं होता इसी प्रकार के पंचेन्द्री जीव असंज्ञी कहलाते हैं। संज्ञी को सैनी और असंज्ञर को असैनी भी कहते हैं।

अथ 85 लाख योनि -

स्थावर 52 लाख, त्रस 32 लाख

52 लाख स्थावर

पृथ्वीकाय 7 लाख, जलकाय 7 लाख, अग्निकाय 7 लाख,

पवनकाय 7 लाख, बनस्पति काय 24 लाख।

24 लाख बनस्पतिकाय -

प्रत्येक बनस्पति 10 लाख, नित्यनिगोद 8 लाख, इतर निगोद 8 लाख।

नोट - नित्यनिगोद और इतर निगोद दोनों बनस्पति काय में शामिल हैं और यह दोनों साधारण ही होती है केवल 10 लाख वनस्पति प्रत्येक होती है।

प्रत्येक उसको कहते है जो एक शरीर में एक जीव हो, साधारण उसको कहते हैं जो एक शरीर में अनेक जीव हों।

32 लाख त्रसकाय

विकलत्रय 6 लाख, पंचेन्द्रि 26 लाख।

6 लाख विकलत्रय

बेइंद्रिय 2 लाख, तेइंद्रिय 2 लाख, चौइंद्रिय 2 लाख।

नोट - बइंद्रिय यानि दो इन्द्रि वाले जीव तेइन्द्रि यानि तीन इन्द्रिबधारी जीव और चार इन्द्रिय धारने वाले जीव यह तीनों जाति के जीव विकलत्रय कहते हैं।

26 लाख पंचेन्द्रिय -

मनुष्य 14 लाख, नारकी 4 लाख, देव 4 लाख, पशु 4 लाख।

चार लाख पशु -

शेर वगैरा दरिदे गौ वगैरा चरिन्दे चिड़िया वगैरा परिन्दे सांप गोह वगैरा जो पञ्चेन्द्रिय जीव जमीन में रहते हैं और मच्छी वगैरा जो पञ्चेन्द्रिय

जीव जल में रहते है यह सर्व चार लाख पशु पर्याय में शामिल है।

62 लाख तिर्यंच –

52 लाख स्थावर, 6 लाख विकलत्रय, और 4 लाख पशु यह सर्व 62 लाख जाति के जीव तिर्यंच कहलाते हैं।

नोट– तिर्यंच शब्द का अर्थ तिरछा चलने वाला भी है और कुटिल परिणामी भी है सो स्थावरचल नहीं सके इसलिये यहां तिरछा चलने वाला अर्थ नहीं बन सकता पस इस स्थान पर तिर्यंच शब्द का अर्थ कुटिल परिणामी है क्लेंकि इन 62 लाख योनि के जीवों के परिणाम कुटिल होते हैं।

5 स्थावर –

त्रसके सिवाय बाकी के पांचों काय के जीव पांच स्थावर कहलाते हैं।

नोट – स्थावर उसको कहते हैं जो चल फिर नहीं सकते और जो चल फिर सकते है वह त्रस कहलाते हैं।

4 प्रकार के त्रस –

बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय।

नोट – एक इन्द्रिय के सिवाय बाकी सर्व जीव त्रस कहलाते हैं।

6 काय

1. पृथ्वीकाय, 2. अप (जल) काय, 3. तेज (अग्नि) काय, 4. वायुकाय, 5. बनस्पतिकाय, 6 त्रसकाय।

नोट – संसारी जीव यह छै प्रकार के शरीर धारण करते हैं।

पृथिवीकाय –

जो जीव चलने फिरने उडने वाले सूक्ष्म या मोटे पृथिवी पर रहते हैं या सांप आदि जमीन में रहते हैं वह पृथ्वीकाय में शामिल नहीं है जिन जीवों का शरीर खास मट्टी या पत्थर वगैरा ही है जो चल फिर नहीं सकते वही जीव पृथिवीकाय कहलाते हैं।

जलकाय –

जो जीव चलने फिरने वाले मच्छी वगैरा बड़े या सूक्ष्म पानी में रहते हैं वह जलकाय में शामिल नहीं है जिन जीवों का शरीर खासपानी ही है जो चल फिर नहीं सकते वह जीव जलकाय कहलाते हैं, जल का नाम अप भी है इसलिये जलकाय के जीव अपकाय भी कहलाते हैं।

अग्निकाय –

अग्निकाय के वह जीव हैं जिनका शरीर खास अग्नि ही है, वह चल फिर नहीं सकते, अग्नि का नाम तेज भी है, इसलिये अग्निकाय के जीव तेजकाय भी कहलाते हैं।

वायुकाय –

जो जीव सूक्ष्म या मोटे चलने फिरने उडने वाले वायु में रहते हैं, वह वायुकाय में शामिल नहीं हैं, जिन जीवों का शरीर खास वायु ही है वह जीव वायुकाय कहलाते हैं।

बनस्पतिकाय –

जो जीव चलने फिरने वाले कीडे वगैरा दरखतों में या फलों में होते हैं, वह वनस्पतिकाय में शामिल नहीं हैं, जिन जीवों का शरीर खास दरखत पौदे फल फूल है, वह जीव बनस्पतिकाय कहलाते हैं।

त्रसकाय -

जो जीव चलने फिरने या उडनेवाले सांप, बिस्छू कीडी वगैरा सूक्ष्म या मोटे जमीन में रहते हैं या मच्छी वगैरा जल में रहते हैं या हवा में उडते फिरते रहते हैं या कीडे अल वगैरा सबजी, पात फलों में रहते है यह सब त्रसकाय कहलाते हैं, अर्थात मनुष्य देव, नारकी पशुपक्षी जितने स्थलचर नभचर जलचर आदि त्रसनाडी के अंदर चलने फिरने वाले संसारी जीव है वह सर्ब त्रस जीव कहलाते हैं।

त्रसजीव स्थान -

कोई भी त्रसजीव त्रसनाली से बाहिर नहीं जा सकता, हां किसी त्रसजीव के त्रसनाली में तिष्टते हुए कुछ आत्म प्रदेश बाहिर जा सकते हैं जैसे केवली के समुदघात होने के समय तीन लोक में आत्म प्रदेश फैलते हैं या जो त्रसजीव त्रस नाली से मरकर त्रसनाली के बाहिर स्थावर बनते हैं या त्रसनाली से बाहिर स्थावर योनि छोड़कर त्रस नाली के अंदर त्रस उत्पन्न होते हैं मरती दफे जब एक शरीर से दूसरे शरीर तक उनके आत्म प्रदेश तंतु समान बंधते हैं तब उनके आत्मप्रदेश बाहिर भीतर जाते हैं वरने पूरा त्रस जीव किसी हालत में भी त्रसनाली से बाहिर नहीं जाता। त्रसनाली तीनलोक के मध्य एक राजू चौडी एक राजू लंबी 14 राजू ऊंचो है इसमें नीचे निगोद में 1 राजू में त्रसनाली में त्रसजीव भरे हुए है इस त्रसनाली में स्थावर भी भरे हुए हैं त्रसनाली इसको इस कारण से कहते हैं कि स्थावर जीव तो त्रसनाली के वाहिर भीतर तीनलोक में भरे हुए हैं त्रस रिफ त्रसनाली में ही है इस वजह से यह त्रसनाली कहलाती है और त्रसजीव इस में ही बाहिर नहीं।

3 तीन लोक -

अलोकाकाश के बीच में तीन बातवलों कर वेष्टित यह तीन, लोक तिष्ठे ह ऊर्द्ध (ऊपर का) लोक, मध्य (बीचका) लोक, पाताल (नीचरला) लोक, यह तीन लोक नीचे से 7 राजू चौड़े 7 राजू लंबे हैं ऊपर से एक राजू चौड़े एक राजू लंबे है बीच में से कहीं घटता हुवा कहीं से बढ़ता हुवा जिस प्रकार मनुष्य अपने दोनों हाथ कटनी पर रखकर पैर छीदे करके खड़ा हो जावे इस शक्ल में नीचे से ऊपर तक तीनों लोक 14 राजू ऊंचे हैं अगर चौड़ाई लम्बाई और ऊंचाई को आपस में जरब देकर इनका रकबा निकाला जावे तो पैमायश में यह तीनों लोक 343 मुकाब राजू हैं मुकाब उस को कहते हैं जिसके छहों पासे एकसां हो अर्थात यदि इस लोक के एक राजू चौड़े एक राजू लंबे एक हाजू ऊंचे ऐसे खंड बनाये जावें तो तीन लोक की कुल पैमायश 343 राजू हैं।

अथ मध्य लोक -

इस मध्य लोक में असंख्यातें द्वीप, समुद्र है उनके बीच लवण समुद्र कर वेढ़ा लक्ष योजन प्रमाण यह जम्बू द्वीप है इस जम्बू द्वीप के मध्य लक्ष योजन ऊंचा सुमेरू पर्वत है, यह सुमेरू पर्वत एक हजार योजन तो पृथ्वी में जड़ है और 99 हजार योजन ऊंचा है सुमेरू पर्वत और सौधर्म स्वर्ग के बीच में एक बाल की अणी मात्र अंतर (फासला) है हम जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में रहते हैं।

अथ काल चक्र का वर्णन -

एक कल्प 20 कोटा कोटि सागर का होवे है एक कल्प काल के दो हिस्से होय हैं प्रथम का नाम अवसर्पणो काल है यह 10 कोटा कोटि

सागर का होय है दूसरे का नाम उत्सर्पणा काल है यह भी 10 कोटा कोटि सागर का होय है, जब अवसर्पणी काल का प्रांरभ होय है उसमें पहले प्रथम काल फिर दूसरा तीसरा चौथा पांचवां छठा प्रवरते हें, छठे के पीछे फिर उत्सर्पणी काल का प्रारम्भ होय है उसमें उलटा परिवर्तन होय है। अर्थात् पहले छठा काल बीते है फिर पांचवां चौथा तीसरा दूसरा पहिला प्रवरते हैं प्रथम के पीछे प्रथम और छठे के पीछे छठाकाल आवे है इस प्रकार अवसर्पणी काल के पीछे उत्सर्पणी काल आवे हैं और उत्सर्पणी काल के पीछे अवसर्पणी काल आवे है ऐसे ही सदैव से पलटना होती चली आवे है और सदैव तक होतो हुई चली जावेगी। जितने भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र है इनही में यह छै काल की प्रवृति होय है। दूसरे द्वीप महाविदेह भोग भूमि आदि क्षेत्रों में तथा स्वर्ग नरकादिक हैं उनमें कहीं भी इन छै काल की प्रवृति नहीं उनमें सदा एक ही रीति रहे है आयु कायादिक घट बढें नहीं देव लोक और उत्कृष्ट भोग भूमि में सदा प्रथम सुखम सुखमा काल की रीति रहे है मध्य भोग भूमि में जो दूसरा सुखमा काल उसकी रीति रहे है जघन्य भोग भूमि में सुखमदुखमा जो तीसरा का सदा उसकी रीति रहे है और महाविदेह क्षेत्रों में सदा दुखमसुखमा जो चाक्था काल उसकी रीति रहे है और अंत के आधे स्वयम्भू रमण समुद्र में तथा चारों कोण विषे तथा अन्त के आधे द्वीप में तथा समुद्रों के मध्य जितने क्षेत्र है उनमें सदा दुखमा जो पंचम काल उसकी रीति रहे है और नरक में सदा दुख दुखमा जो छठा काल सदा उसकी रीति रहे सिवाय भरत और ऐरावत क्षेत्र के बाकी सब क्षेत्रों में एक ही रीति रहे हैं सिरफ आयु कायादिक का घटना बढ़ना रीति का पलटना भरत क्षेत्रों और ऐरावत क्षेत्रों में ही होय है अवसर्पणी के छै काल में दिन बदिन जीवों के

सुख आयु काय घटते हुए चले जावे है उत्सर्पणी के छहों काल में दिनबदिन बढ़ते हुए चले जाय हैं।

6 काल के नाम

1. सुखमसुखमा, 2. सुखमा, 3. सुखम दुःखमा, 4. दुःखम सुखमा, 5. दुःखमा, 6. दुखमदुःखमा

6. काल की अवधि

प्रथम काल 4 कोटा कोटि सागर का होय है। दूसरा 3 कोटा कोटि सागर का, तीसरा 2 कोटा कोटि सागर का, चौथा 42 हजार वर्ष घाट 1 कोटा कोटि सागर का, पंचम 21 हजार वर्ष का, छठा 21 हजार वर्ष का होय है।

नोट - प्रथम काल में महान सुख होता है दूसरे में सुख होता है दुःख नहीं परन्तु जैसा सुख प्रथम में होता है वैसा नहीं उससे कुछ कम होता है, तीसरे में सुख है परन्तु किसी किसी को कुछ लेश मात्र दुःख भी होता है चौथे में दुःख और सुख दोनों होते हैं पुण्यवानों को सुख होता है और पुण्यहीनों को दुःख होता है बल्कि वाजवकत पुण्यवानों को भी दुःख हो जाता है पांचवे में दुःख ही है सुख नहीं सुख नाम उसका है जिसे दुःख न होवे सो पञ्चम काल के जीवों को किसी को कुछ दुःख है किसी को कुछ दुःख है जिस प्रकार कोई दुखी पुरूष जब सो जाता है उसे अपने दुःख का स्मरण नहीं रहता इसी प्रकार जब इस पंचम काल के जीव किसी विषे में रत हो जाते हैं तो जो दुःख उनके अन्तष्करण में है उसे भूल अपने तई सुखी माने है जब उनको फिर दुःखयाद आवे है वह फिर दुःख मानते हैं। इसलिये पंचमकाल में दुःख ही है सुख नहीं छठे काल में

महादुःख है।

अथ 4 अनुयोग

1. प्रथमानुयोग, 2 करणानुयोग, 3 चरणानुयोग, 4. द्रव्यानुयोग ।

1. प्रथमानुयोग नाम पुराणरूप कथनी (तखरीख) (History) का है जितने जिनमत के पुराण, चरित्र, कथा हैं जिनमें पुण्य पाप का भेद दरशाया है वह सर्व प्रथमानुयोग की कथन है।

2. करणानुयोग नाम जुगराफिये (Grography) का है जो कुछ अलोका काश और लोकाकाश आदि तीन लोक में द्वीपक्षेत्र समुद्र पहाड दरया स्वर्ग नरक आदि की रचना है सब का वर्णन करणानुयोग में है।

3. चरणानुयोग नाम आचरण, चारित्र (क्रिया) (हुनर) (Arts) का है गृहस्थियों की जितनी क्रिया आचरण हैं और गृहत्यागी जो मुनि उनके चारित्र आचरण का कुल वर्णन चरणानुयोग में हैं।

4. द्रव्यानुयोग नाम पदार्थ विद्या (इलमतवई) (Science) का है दुनियां में जो जीव (रूह) (Soul), अजीव (मादा) (Matter) पदार्थ हैं उनके गुण खासियत ताकत का कुल वर्णन द्रव्यानुयोग में हैं।

नोट - यह हमने चारों अनुयोगों का मतलब वालकों को समझाने को बहुत ही संक्षेप रूप लिखा है इस का विशेष वर्णन छोटा रत्न करंड 150 श्लोक वाला और बड़ा रत्नकरंड जो ताड पत्रों पर मैसूर में भट्टारकजी के पास है आदि ग्रंथों से जानना।

इन चारों अनुयोग में वोह कथनी है जिसकी वाकफीयत से इस जीवका कल्याण हो अर्थात् ज्ञानकी वढबारी होने से यह जीव पाप

कार्य्य को छोड़कर धर्मकार्य में प्रवर्ते ।

तीनलोक में सब से बड़ी सड़क -

इन तीन लोक में आने जाने को पाताल लोक के नरक से लेकर उर्द्ध लोक के सर्वार्थ सिद्धि तक एक त्रसनाली नामा सडक है त्रस जीव रूपी मुसाफिर हर दम उस पर गमन करते हैं जैनमत रूपी रास्ता बताने वाला कहता है कि उन 14 गुण स्थान नामा पौड़ियो के मार्ग से ऊपर चांदने की तरफ को जाओ, नीचे नरक रूपी महा अंधेरा खाडा है उस में गिर पडोगे, और मिथ्या मत रूपी राहबर कहता है कि अगर इस दुनिया की चौरासी लाख यूनी रूपी घरों की सैर करनी है तो चीचे को जाओ ऊपर को मत जाओ ऊपर को जाओगे तो मुक्त रूपी पिंजरे में फंस जाओगे जहां से इस दुनियां में फिर न आसकोगे, वहां खानापीना चलनाफिरना जोरूजातक कुछ भी मवसिर न आवेगा, वलकि यह अपना सोहना मनमोहना शरीर भी खो बैठोगे।

अथ 14 गुणस्थान

1. मिथ्यात्व, 2. सासादन, 3. मिश्र कहिये सम्यक्मिथ्यात्व 4. अविरत सम्यकत्व, 5. देशव्रत 6. प्रमत्त संयमी, 7. अप्रमत्त संयमी 8 अपूर्णकरण, 9 अनिवृतिकरण 10. सूक्ष्मसांपराय 11. उपशांतकषाय वा उपशांतमोह 12. क्षीणकषाय वा क्षीणमोह 13. सयोगकेवली 14. अयोगकेवली।

नोट - इनमें पंचम गुणस्थान तक गृहस्थ औरा छठे से लेकर 14 तक मुनि होव है :-

1. पहला गुणस्थान मिथ्या दृष्टियों के होय है भव्य कै भी होय अभव्य

कै भी होय।

2. दूसरा सासादन गुणस्थान जो सम्यक्त्व से छूट मिथ्यात्व में जावे जब तक मिथ्यात्व में न पहुंचे बीच की अवस्था में होय है जैसे फल वृक्ष से टूटे जब तक भूमि पर नहीं पहुंचे तब तक बीच का मारग सासादन कहिये इस दूजे गुणस्थान से लेकर ऊपर 14वें तक के भाव भव्य के ही होय अभव्य के न होय क्योंकि अभव्य के सम्यक्त्व कभी भी न होय है और दूजे से लेकर ऊपर 14वकं तक के भाव उसी के होय जिसके सम्यक्त्व हो गया होय, जो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की शुद्धिता कर मोक्ष पाने को योग्य है वह भव्य है और मोक्ष से विमुख अभव्य है और जिनके सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की निर्मलता होय वह निकट भव्य है।

3. गुणस्थान सम्यकत्व और मिथ्यात्व दोनों मिलकर मिश्र होय है।

4. गुणस्थान अव्रत सम्यग्दृष्टि गृहस्थी श्रावक के होय है।

5. गुणस्थान दुलक एलक आदि व्रतीश्रावक के होय है।

6. गुणस्थान सर्व साधारण प्रमत्त संयमी मुनि कै होय है।

7. गुणस्थान 15 प्रकार के प्रमाद के अभाव से अप्रमत्त संयमी के होय है।।

8.9.10. गुणस्थान उपशम और क्षायकश्रेणी वाले मुनि कै होय है।

11. गुणस्थान उपशांत कषाय मुनि कै होय है।

12. गुणस्थान क्षीण कषाय मुनि के होय है।

13.14. गुणस्थान केवली कै होय है।

अथ 8 कर्म का वर्णन

1. कर्म क्या चीज है, इस जीव का कर्तव्य।

2. कर्म कितनी प्रकार के हैं कर्म 8 प्रकार के है चार घाति चार अघाति।

3. चारघाति कर्मकेक्या नाम है ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, मोहनीय।

4. चार अघाति कर्म के क्या नाम है। 1. आयु, 2. नाम, 3. गोत्र, 4. वेदनीय।

5. घाति कर्म किसको कहते हैं। जो आत्मा के स्वभाव को घाते (कमजोर करें)

6. अधाति कर्म किस को कहते हैं। जो आत्मा के स्वभाव को कमजोर तो नहीं करता परंतु दुख सुख का कारण बनाये हैं।

अथ आठों कर्म्मों का कर्तव्य ।

1 ज्ञानावरण कर्मका कर्तव्य ।

पहले कर्म का नाम ज्ञानावरण है इस का स्वभाव पड़दे समान है इस का कर्तव्य यह जीव के सम्यकज्ञान को आछादित करे है (ढके है)

2. दर्शनावरण कर्म का कर्तव्य।

दूसरे कर्म का नाम दर्शनावरण है इस का स्वभाव दरवान समान है आत्मा को अपने निज स्वरूप का दर्शन न होने दे।।

3. अंतराय कर्म का कर्तव्य।

तीसरे कर्म का नाम अंतराय है इसका स्वभाव भंड़ारी समान है यह आत्मा को लाभ में अंतराय करे यानि विध्न डाले।।

4. मोहनीय कर्म का कर्तव्य।

चौथे कर्म का नाम मोहनीय है इसका स्वभाव मदिरा समान है यह आत्मा को भरम ही उपजावे उसको अपने ज्ञान दर्शनमय निज स्वभाव का ठीक सरधान न होने दे।।

5. आयु कर्म का कर्तव्य।

पांचवें कर्म का नाम आयु है इस का स्वभाव महाढ़बेड़ी समान है यह जीव को एक खास मियाद् तक भवरूप वंदो खाने में राखे है।

6. नाम कर्म का कर्तव्य ।।

छठे कर्म का नाम कर्म है इसका स्वभाव चितेरे समान है जैसे चितेरे अनेक प्रकार के चित्र ऐसे ही यह आत्मा को 84 लाख योनियों की तरफ की गतियों में भ्रमण करावे है।

7. गोत्र कर्म का कर्तव्य ।।

सातवें कर्म का नाम गोत्र कर्म है इसका स्वभाव कुम्हार समान है जैसे कुम्हार छोटे बड़े बरतन बनावे तैसे गोत्र कर्म ऊञ्चे नीचे कुल में उपजावे आत्मा का छोटे शरीर या बड़ा निरवल या बली उपजावे जैसे नाम कर्म ने धोड़ा बनाया तो गोत्र कर्म चाहे तो उसे बहुत बड़ा वैलर धोड़ा करे चाहे जरासा टटवा करे।

8. वेदनी कर्म का कर्तव्य ।।

आठवें कर्म का नाम वेदनी कर्म है इस का स्वभाव शहद लपेटी खडग की धारा समान है जो किंचित मिष्ठ लगे परन्तु जीभ को काटे जैसे जीव को किंचित साता उपजाय सदा दु:ख ही देवे है।

कर्म को किस तरह जीते है ?

ईश्वर की यादगार से इस दुनिया को फानी जान इस की लजतो से मुख मोड़ यानि तमाम धन दौलत कुटंब आदि तमाम परिग्रह को छोड़ तप अंगीकार कर समाधी ध्यान धर परमात्मा का स्वरूप चिंतवन करते हैं सो परमात्मा के स्वरूप के चिंतवन से सर्व कर्मो का नाश हो जाता है।।

कर्मो के नष्ट होने से क्या होता है ?

जब कर्म जाते रहे चिंतवन करने वाला आप भी वैसा ही परमात्मा सर्व का जानने वाला सर्वज्ञ हो जाता है।।

क्या इन्सान भी परमात्मा हो जाता है?

जैसे अग्नि में जो लकड़ी ड़ालो वह अग्नि रूप हो जाती है तैसे ही जो ईश्वर परमात्मा सर्वज्ञ का ध्यान चिंतवन करे वह वैसा ही हो जाता है।।

अथ 7 कर्म्म की 147 प्रकति का वर्णन ।

ज्ञानावरण की 5 दर्शनावरण की 9 अंतराय की 5 मोहनीय की 28 आयु की 4 गौत्र की 2 वेदनीय की 2 नाम की 93।।

ज्ञानावरण के 5 भेद।

1 मति 2 श्रुति 3 अवधि 4 मनपर्यय 5 केवलज्ञान।।

दर्शनावरण के 9 भेद।

1 चक्षु 2 अचक्षु 3 अवधि 4 केवल 5 निद्रा 6 निद्रा निद्रा 7 प्रचला 8 प्रचला प्रचला 9 स्त्यानगृद्धि ।।

अन्तराय के 5भेद।

1 दान 2 लाभ 3 भोग 4 उपभोग 5 वीर्य।।

मोहनीय कर्म्म के 27 भेद।

दर्शन मोहनीय के 3 चारित्र मोहनाय के 25 ।।

दर्शन मोहनीय के 3 भेद।

1. सम्यक्त 2. मिथ्यात्व 3. मिश्र।

चारित्र मोहनीय के 25 भेद।

4 अनंतानुवन्धि क्रोध मान, माया लोभ। 4 अप्रत्याख्यान क्रोध, मान माया लोभ। 4 प्रत्याख्यान क्रोध, मान माया लोभ। 4 संज्वलन क्रोध मान माया लोभ 17 हास्य 18 रति 19 अरति 20 शोक 21 भय 22 जगुप्सा 23 स्त्री 24 पुरूष 25 नपुंसक।

आयु कर्म्म की 4 प्रकृति –

1. देव आयु 2 मनुष्य आयु 3 तर्यंचायु 4 नरकायु।

गोत्र कर्म्म की 2 प्रकृति

1. उच्च गोत्र 2. नीच गोत्र।

वेदनीय के 2 भेद

1. सातावेदनीय 2. असातावेदनीय।

अथ नाम कर्म्म की 83 प्रकृति।

पिंड प्रकृति 65, अपिंड प्रकृति 28

अथ पिंड प्रकृति के 95 भेद।

4 गति 5 जाति 5 शरीर 3 अंगोपांग 5 बंधन 5 संघात 6 संहनन 6 संस्थान 5 वर्ण 2 गंध 5 रस 7 स्पर्श 4 आनुपूर्वी 2 स्थान।।

नोट – यह 14 प्रकार के बड़े भेद हैं। छोटे भेद 65 है।

4 गति।

नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति,

5 जाति।

एकेन्द्रिय, वेंद्रि, तेंद्रि, चतुरेंद्रि, पंचेद्रिय।

5 शरीर

औदरिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्म्मण।

3 अंगोपांग

1. औदरिक, 2. वैक्रियक, 3. आहारक।

5 बन्धन

औदरिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण।

5 संघात।

औदरिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण।

6 संहनन।

1. वज्रवृषभनाराच 2. वज्रनाराच 3. नाराच 4. अर्द्धनाराच 5. कीलक 6 स्फाटिक ।।

6 संस्थान

1. समचतुरस्त्र 2 न्यग्रोध 3 स्वाति 4 वामन 5 कुब्जक 6 हुंडक।

5 वर्ण

1 शुल्क 2. कृष्ण 3 नील 4 रक्त 5 पीत।

2 गंध।

1. सुगंध, 2 दुर्गंध।

पांचरस।

1. तिक्त, 2 कड़वा, 3 खारा, 4 खट्टा, 5 मिट्ठा

7 स्पर्श

1 करडा 2 नरम 3 भारी 4 हलका 5 चिकना 6 रूखा 6 ठंडा 7 गरम।

4 आनुपूर्वो

1 नारक, 2 तिर्यंच 3 मनुष्य, देव 4 ।।

2 स्थान।

1. प्रमाण स्थान, 2 निर्णय स्थान।।

अथ अपिंड प्रकृति के 27 भेद।

प्रत्येक प्रकृति 8, त्रसादिक प्रकृति 10, स्थावरादिक प्रकृति 10

8 प्रत्येक प्रकृति

1 पर घात 2 उच्छवास 3 आताप 4 उद्योत 5 अगुरू 6 लघु 7 विहायोगति 8 उपघात।

10 त्रसादिक प्रकृति

1 त्रस 2 बादर 3 पर्याप्त 4 प्रत्येक 5 स्थिर 6 शुभ 7 सुभग 8 सुस्वर 9 आदेश 10 यश:कार्ति।

10 स्थावरादिक प्रकृति

1 स्थावर 2 सूक्ष्म 3 अपर्याप्त 4 साधारण 5 अस्थिर 6 अशुभ 7 दुर्भग 8. दुस्वर 9 अनादेय 10 अपयश।

नोट – यह 8 कर्म की 187 प्रकृति कही।

अथ 7 तत्व

1 जीव, 2 अजीव, 3 आश्रव, 4 बंध, 5 संवर, 6 निर्जरा, 7 मोक्ष।

9 पदार्थ

सात तत्व के साथ पाप पुण्य मिलाने से यह 9 पदार्थ कहलाते है।

नोट – श्रावक को इन का स्वरूप जानना जरूरी है।

अथ तत्व शब्द का अर्थ

तत्व शब्द उस जाति का शब्द है जो शब्द तो हो एक और उसके अर्थ हों अनेंक संस्कृत कोषों में तत्व शब्द के भी कईक अर्थ है।

असलियत भी है, रस भी है रूप भी है,अनासर भी है, पदार्थ भी है, परमात्मा भी है। विलम्बित नृत्य भी हैं, और सांख्यमत शास्त्रोक्त प्रकृति भी है महत, अहंकार, मनः भी है, पंच भूत भी है पंचतन्मात्रा भी है पंच ज्ञान इन्द्रि और पंच कर्मेन्द्रि आदि कईक हैं चूकिं तत्व ज्ञान नाम ब्रह्म ज्ञान यथार्थ ज्ञान आत्मिक ज्ञान रूहानी इलम का है यानि तत्व जो परमात्मा उसका जो ज्ञान उस को तत्व ज्ञान कहते हैं तत्व दर्शी ब्रह्मज्ञानी, आत्मिक ज्ञान वाला, असलियत के देखने वाले को कहते है यद्यपि तत्व शब्द का जियादातर अर्थ परमात्मा है परन्तु हमारे जैन मत में जब यह कहा जाता है कि तत्व सात हैं तो यहां तत्व शब्द का अर्थ प्रदार्थ है नव पदार्थ कहते हैं कि तत्व शब्द का अर्थ वो प्रदार्थ है जिस से परमात्मा का ज्ञान हो वह प्रदार्थ सात ही है परन्तु यहां इतनी बात और समझनी है कि पदार्थो की संख्या के विषय में जो सांख्यमत वाले 25 तत्व मानते है नैयायिक 7 वैशेषिक 16 बौध 4 तत्व मानते हैं सो जैनी 7 तत्व किस प्रकार से मानते है इस का उतर यह है कि तत्व शब्द का अर्थ जो प्रदार्थ हैं सो सामान्य रूप से है सो जैसे पदार्थ शब्द में दा पद हैं (पद्+अर्थ) अर्थात् पदस्य अर्था: यानि पदका जो अर्थ वही पदार्थ है यहां इतनी बात और जाननी जरूरी है कि जगत में अनंत पदार्थ हैं जैनी सात ही क्यों मानते हैं इस का उत्तर यह है कि इस सात पदार्थो के अन्दर तमाम पदार्थ अन्तर्गत है इनसे बाहर कुछ भी नहीं तथा जिन वस्तुवों से जिस के कार्य्य की सिद्धि हो उसके वास्ते वही पदार्थ कार्यकारी है वह उनही पदार्थो को पदार्थ कहते है जैसे वाज वकत रसोई खाने वाला कहता है आज तो खूब

पदार्थ खाए इस प्रकार जिनमत में कार्य्य मोक्ष की प्राप्ति का है सो मोक्ष की प्राप्ति सात पदार्थों के जानने से होती है और की जरूरत नहीं इसलिये जिनमत में जिन सात पदार्थों से मोक्ष की सिद्धि हो उन ही सात को तत्व माना है स्वर्गादिक की सिद्धि में पुण्य पाप की भी जरूरत पड़ती है इस वास्ते सात से आगे नौ पदार्थ माने हैं वरना अगर असलियत की तरफ देखो तो सामान्य रूप से तमाम दुनिया में पदार्थ एक ही रूप है ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो पदार्थ संज्ञा से बाहिर हो पदार्थ कहने में सब वस्तु आ गई अन्यथा जीव और अजीव रूप से दो ही पदार्थ हैं सिवाय जीव के जितनी अजीव यानि अचेतन वस्तु हैं सब अजीव में आ गई। चूंकि जैनमत में अभिप्राय इस जीव को संसार के भ्रमण के दुःखों से छुड़ाय मोक्ष के शाश्वते सुख में तिष्ठा ने का है सो इस कार्य की सिद्धि के वास्ते प्रयोजन भूत जो पदार्थ उन को ही यहां तत्व माने है सो मोक्ष की प्राप्ति के लिये सात तत्त्वों का जानना ही कार्य कारी है सो उन के ज्ञान का यह तरीका है कि प्रथम तो यह जाने, कि जीव क्या वस्तु है और अजीव क्या वस्तु है, जीव का क्या स्वभाव है और अजीव का स्वभाव है, क्योकिं जब तक जीव अजीव का क्या स्वभाव है, और अजीव से भिन्न अपने आत्मा का स्वरूप कैसे समझे। जब यह दो बात जान जावे तब तीसरी बात यह जाने कि यह जीव जगत में जामण मरण करता हुवा पघाक फिरे है, सो इसका कारण कर्म्म है सो फिर कर्म्म की बाबत जाने सो कर्म्म के जानने का क्रम यह है।।

1. कर्म्मका आगमन किस प्रकार होता है ।।(शुभ कर्म का आगमन रूप आश्रव में पुण्य और अशुभ कर्म का आगमन रूप आश्रम में पाप अर्न्तगत है)।।

2. कर्म्म का वन्ध किस प्रकार होता है ।।

3. कर्म्म का आवना किस प्रकार रूक सक्ता है।।

4. जो कर्म्म आत्मा के प्रदेशों में बंध रूप होते हुए बढ़ते रहते हैं उनका घटना किस प्रकार होता है यानि उनको निर्जरा किस प्रकार होती है।।

5. आत्मा से सारे कर्म्म किस प्रकार हट सकते हैं अर्थात् क्षय को प्राप्त हो सकते हैं और जब सारे कर्म्म नष्ट हो जावें तब इस आत्मा का क्या रूप होता है बस पांच बातें यह और दो जीव अजीव जो पहले वियान करे इस लिये इस जीव को जगत् भ्रमण से छुड़वाने के लिये इन सात पदार्थो (तत्वों) का जानना ही कार्य कारी है इस लिये जिनमत में सात ही तत्व माने हैं।।

7 तत्वों का स्वरूप ।

1. जीव – जीव उसको कहते हैं जिस में चेतना लक्षण हो अर्थात् जो जाने है देखे है करता है दुःख सुख का भोक्ता है, अरक्ता कहिये तजने हारा है, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, गुण, सहित है, असंख्यात प्रदेशी लोक प्रमाण है और प्रदेशों का संकोच विस्तार कर शरीर प्रमाण है उसे जीव कहते हैं पुद्गल में अन्नत गुण है परंतु जानना, भोगना आदि गुण जीव में ही हैं पुद्गल में यह गुण नहीं न पुद्गल (अजीव) को समझ है। यानि नेक वद की तमीज नहीं न पुद्गल को दीखे है न पुद्गल दुःख सुख मालूम करता है यह गुण आत्मा में ही है इसी से जाना जाय है कि जो वह पुद्गल से अलग है जब इस शरीर में से जीव निकल जाता है तब शरीर में समझने की देखने की दुःख सुख मालूम करने की ताकत नहीं रहती सो जीव के दो भेद है सिद्ध और संसारी उस में संसारी के दो भेद हैं एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य है उसे भव्य कहिये और कोरडू (कुडकू)

उड़द समान जो कभी भी सीझे उसे अभव्य कहिये भगवान् के भाषे तत्वों का श्रद्धान भव्य जीवों के ही होय अभव्य के न होय ।।

2. अजीव- अजीव अचेतन को कहते हैं जिस में स्पर्श, रस, गंध और वर्ण आदि अन्नत गुण हैं परंतु उसमें चेतना लक्षण नहीं है अर्थात जिस में जानने देखने दुःख सुख भोगने की शक्ति आदि गुण नहीं वह अजीव (जड़) पदार्थ है।

3. आश्रव-शुभ और अशुभ कर्म्मो के आधने का नाम आश्रव है अर्थात् जिस परिणाम (क्रिया) से जीव के शुभ और अशुभ कर्म्म का आगमन हो उसका नाम आश्रव है।।

4. बन्ध - आत्मा के प्रदेशों से कर्म का जुड़ना इसका बंध है यहां इतनी बात और जान लेनी कि जिस प्रकार स्वर्ण आदि पदार्थ के साथ स्वर्ण आदि जुड़ कर हो जाते हैं इस तरह कर्म आत्मा से बंध रूप नहीं होता जीव निराकार है यानि आकार रहित है और अजीव (जड़) आकार सहित ह सो आकार रहित की साथ आकार सहित जुड़ नहीं सकता इसका सम्बन्ध इस तरह है कि किसी संदूक में ऊपर नीचे आदि छहों तरफ मकनातीस पत्थर के ढेले लगाओ उनके बीच में लोहा रखो सो छहों तरफ मिकनातीकी कशिश से वह लोहा इधर उधर कहीं भी नहीं जा सकता जहां उस संदूक को ले जाओगे वहां ही लोहा जावेगा इसी तरह जीव के हर तरफ कर्म हैं जहां कर्म इसको ले जाते हैं वहां इसे जाना पड़ता है जीव कर्मो को साथ नहीं ले जाता क्योंकि जीव में तो उर्द्ध गमन स्वभाग है सो जीव कर्मो को साथ ले जाता तो ऊपर को स्वर्गादिक में जाता नीचे नरकादिक में न जाता सो कर्म जीव को ले जाते हैं।।

5. सम्बर - आवते कर्मो को रोकना इसका नाम सम्बर है अर्थात् रोकने

का नाम न आने देने का नाम सम्बर है सो जिस क्रिया या परिणाम से शुभ या अशुभ कर्म आवे उस रूप न प्रवर्तना सो सम्बर है। अर्थात् परिणामों को अन्य विकल्पों से हटाकर अपने आत्मा (निज स्वरूप) के चिंतवन में ही काबू रखना सो संवर है।

6. निर्जरा नाम कर्म के कम होने का है कर्म का घटना या कमजोर होना इसका नाम निर्जरा है जैसे एक पक्षी को धूप में रखकर उसके ऊपर बहुत सी रूई जल से भिगोकर रख दो वह पक्षी उसके भार (बोझ) से दबेगा, धूप की तेजी से उस रूई का जल कम होने से उसका बोझ घटेगा इसी तरह तप संयम में प्रवर्तन करने से तप रूपी धूप से कर्म रूपी जल घटेगा इसी कमी होने का नाम निर्जरा है।

7. मोक्षनाम कर्मो से छुट जाने का है नजात रिहाई का है अर्थात् आत्मा का सर्व कर्मा से रहित हो जाना इसका नाम मोक्ष है जैसे धुप से रूई का जल जब बिलकुल सूक जावे तब तेज हवा में रूई उड जाने से उसमें दबा था जो पक्षी वह उडकर वृक्ष पर जाय बैठे इसी तरह जब कर्मो का रस तप रूपी धूप से घटकर कर्म खश्क हो जावें, तब आत्मध्यान रूपी तेज वायु के प्रभाव से खुश्क कर्म रूपी रूई के उड़ जाने से पक्षी रूपी आत्मा उड़कर मोक्ष रूपी वृक्ष पर जाय बैठेगा सो जीव के जाने को सहाई धर्म्म द्रव्य है जैसे रेल के जाने को सहाई सड़क है सो जहां तक धर्म द्रव्य है वहां तक यह चला जाता है सो मोक्ष स्थान का जो ऊपरला हिस्सा आखिर तक धर्म द्रव्य है सो मोक्ष में उसके आखिर तक यह आत्मा चला जाता है उससे परे अलोकाकाश है उसमें धर्म द्रव्य नहीं इस वास्ते यह आत्मा लोक में ही रह जाता है धर्म द्रव्य उसे कहते हैं जी गमन करने में सहाकारी कारण हो जिसके जरिये से एक स्थान से दूसरी जगह पहुंचे, मोक्ष नाम

उस स्थान का भी है जहां पर यह आत्मा कर्मो से रहित हो कर जाकर तिष्ठता है वह स्थान मोक्ष इस कारण से कहलाता है कि जो जीव तीन लोक में हैं सब कर्मा के बश नहीं चलता इसलिये उन मुक्ति जीवों के आधार रूप स्थान के होने से वह स्थान मोक्ष कहलाता है वह छुटा हुवा स्थान (आजाद स्थान) तीन लोक के मध्य जो वलेय के आकार त्रसनाडी है उस में ऊपरला हिस्सा है उस जगह वही आत्मा जाते हैं जो कर्मो से रहित हो जाते हैं सो जब तक इस संसारी जीव को सम्यग् दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र यह तीनों इकट्ठे प्राप्त न हो तब तक इसे कभी भी मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती यदि इन में से दो की प्राप्ति न हो जावे तब तक भी मोक्ष नही होती तीनों के इकट्ठे प्राप्त होने पर ही मोक्ष हो सकती है जब तक यह जीव कर्मो से छुट गया अर्थात कर्ममल से रहित हो गया तब इसका नाम जीव नहीं रहता क्योंकि जीव उसको कहते हैं जो जीवे, जीवना उसको कहते है जो मरने से पहली स्थिर रहने वाली अवस्था है चूंकि संसारी जीव मरते भी है और फिर जन्मते भी है इसलिये मरने की अपेक्षा संसारी जीव को जीव कहते हैं सिद्ध (मोक्षआत्मा) कभी मरते नहीं इसलिये उनका नाम जीव संज्ञा से रहित है वह सिद्ध या परमात्मा कहलाते हैं परमात्मा का अर्थ परम कहिये श्रेष्ठ, प्रधान, महत् नेक, सरदार, बड़ा आलसी, पाक, पवित्र है सो परमात्मा का अर्थ पवित्र आत्मा श्रेष्ठ आत्मा सब आत्माओं में प्रधान सर्ब में उत्कृष्ट आत्मा है।

नोट – इन सात तत्वों का स्वरूप हर एक जैनी को समझ लेना चाहिये और समझ कर जिससे नये कर्मो का आगमन न हो और पिछले कर्मो की निर्जरा हो उस रूप परिवर्तन करना चाहिये ताकि सर्व कर्मो से छूट जावे कर्मो से छूट जाने से इस संसार के दु:खों से बच जावे। इति 7

तत्व का वर्ण सम्पूर्णम् ।।

जैन पर्व के दिन –

हर एक मास में दो अष्टमी दो चतुर्दशी यह चार दिन जैन ग्रंथों में पर्व्व के माने हैं इन दिनों में जैनी व्रत रखते हैं, जो व्रत नहीं रख सकते वह इन दिनों में अभक्ष्य नहीं खाते हरी नहीं खाते रात्रि को पानी नहीं पीते दुनियादारी के पाप कार्यो का स्थागन कर धर्म ध्यान सेवन करते हैं।

जैन महा पर्व्व के दिन

एक साल में 6 वार महा पर्व्व के दिन आते हैं 3 बार अठाई 3 बार दश लाक्षणी, कार्ति शुक्ल 8 से 15 तक फाल्गुन शुक्ल 8 भी से फाल्गुण शुक्ल 15 तक आषाढ़ शुक्ल 8 से 15 तक यह तीन बार अठाई आती है।

माघ शुक्ल 5 से 14 तक चैत्र शुक्ल 5 से 14 तक भादो शुक्ल 5 से 14 तक यह तीन बार दशलाक्षणी आती हैं देखो रत्नत्रय व्रत कथा छंद नम्बर 10 और सोलहकारण दशलाक्षण रत्नत्रय व्रतों की विधि में छंद नम्बर 6 में दश लाक्षणी में भादों माघ चैत्र में तीनों बार लिखी है परंतु अबार काल दोष से माघ, चैत्र की दश लाक्षणी में पूजन पाठ का रिवाज नहीं रहा।

सब से बड़ा पर्व्व का दिन भादों मास की दशलाक्षणी में अनंत चौदश है।

इन दिनों में धर्मात्मा जैनी व्रत रखते हैं वेला तेला करते है पाठ थापते हैं मांडला पूरते हैं पंचमेरू नंदीश्वर, दशलाक्षणी आदि का पूजन करते हैं जाप, सामायिक, स्वाध्याय, दर्शन शास्त्रश्रवण, आत्मध्यान करते हैं शील पालते हैं ब्रह्मचर्य का सेवन करते हैं दु:खित भूखित को

दान बांटते हैं भोजन देते हैं वस्त्र देते है दवाई बांटते हैं भूखे लावारिस पशुवों को सूका चारा गिरवाते हैं, जानवर पक्षियों का चुगने को अन्न डलवाते हैं दाम देकर भट्ठी, भाड़, तंदूर, बुचरखाना कसाइयों की दुकान बन्द कराते है दुश्मन से क्षमा मांग द्वेष भाव को त्यागन कर मित्रता करते हैं, पाप कार्यो से हिंसा के आरम्भों से बचते हैं फंदियों के जाल में से जानवर छुड़वाते है जमीकंद सबजी आचार बिदल वगैरा अभक्ष नहीं खाते, रात को भोजन पान नहीं करते रात्रि को जागरण कर भगवान के गुण गाते हैं पद विनती, स्तोत्र पढते हैं आरती उतारते है इस प्रकार पाप कर्म की निर्जराकर धर्म का उपार्जन कर पुण्य का भंडार भरते हैं।

श्रावक की 53 क्रिया ।

8 मूल गुण, 12 ब्रत, 12 तप 1 समता भाव 11 प्रतिमा 3 रत्नत्रय 4 दान 1 जल छाणन क्रिया 1 रात्रि भोजन त्याग और दिन में अन्नादिक भोजन सोधकर खाना अर्थात् छानबीन कर देख भालकर खाना ।।

नोट- यह 53 क्रिया श्रावक के आचरणे योग्य हैं यानि इन 53 क्रियाओं को

करने वाला श्रावक नाम कहलाने का अधिकारी है इस बाजे बाजे भोले लोग समता भाव की जगह तीन काल सामायिक करना कहते हैं सो यह उनकी गलती है सामायिक वारह व्रत में आचुकी है देखो चार शिक्षा व्रत का पहला भेद और 11 प्रतिमा में तीसरी प्रतिमा इस लिये जो मूल गाथा में ऐसा पाठ है (गुणतमयतक समपठिमा) सो उस से आशय समता भाव

ही है।।

श्रावक के 7 मूलगुण ।

5 उदंवर । 3 मकार।

इन आठ मूलका त्याग यानि न खाना तिसका नाम 8 मूल गुण का पालना इनके नाम आगे 22 अभक्ष्य में लिखे हैं।

12 ब्रत

5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत।

5 अणुव्रत

1. अहिंसा अणुव्रत, 2 सत्याणुव्रत, 3 परस्त्री त्याग अणुव्रत, 4. अचौर्य (चोरी त्याग) अणुव्रत, 5 परिग्रह परिमाण अणुव्रत ।

3 गुणव्रत

1. दिगव्रत, 2 देशव्रत, 3 अनर्थदंड त्याग।

4 शिक्षाव्रत

सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथि संविभाग, भोगोपभोग परिमाण

12 तप

1. अनशन, 2 ऊनोदर, 3 व्रतपरिसंख्यान, 4 रसपरित्याग, 5. विबिक्तशय्यासन, 6. कायक्लेश, यह छै प्रकार का वाह्य तप है। 7 प्रायश्चित, 8 पांच प्रकार का विनय 9 वैयावृत्य करना 10 स्वाध्याय करना, 11 व्युत्सर्ग (शरीर से ममत्व छोड़ना) 12 चार प्रकार का ध्यान करना। यह छै प्रकार का अन्तरंग तप है।

1. समताभाव

क्रोध न करना अपने परिणाम क्षमा रूप राखने।

11. प्रतिमा

1 दर्शन प्रितिमा, 2 व्रत, 3 सामायिक, 4 प्रोषधोपवास, 5. सचित्तत्याग, 6 रात्रि भुक्ति त्याग, 7 ब्रह्मचर्य, 8 आरम्भ त्याग, 9 परिग्रहत्याग, 10 अनुमति त्याग, 11 अद्दिष्टत्याग।

3 रत्नत्रय

1. सम्यग् दर्शन, 2 सम्यगज्ञान, 3 सम्यग्चारित्र।

यह तीन रत्न श्रावक के धारने योग्य है इनका नाम रत्न इस कारण से है कि जसे स्वर्णादिक सर्व धन में रत्न उत्तम यानि बेशकीमती होा है इसी प्रकार कुल नियम व्रत तप में यह तीन सर्व में उत्तम हैं जैसे बिन्दियां अंक के बगैर किसी काम की नहीं इसी प्रकार वगैर इन तीनों के सारे व्रत नियम कुछ भी फलदायक नहीं हैं सब नियम व्रत मानिन्द विन्दी (शुन्य) के है यह तीनों मानिन्द शुरू के अंक के है इस से इनको रत्न माना है।

चार दान

1. आहार दान, 2 औषधि दान, 3. शास्त्र दान, 4 अभयदान ।

यह चार दान श्रावके को अपनी शक्ति अनुसार नित्य करने योग है इनमें दान के चार भेद है 1 सर्ब दान 2 पात्र दान 3 सम दान 4 करूणा दान।

सर्व दान

मुनि व्रत लेने के समय जो कुल परिग्रह का त्याग सो सर्वदान है। यह सर्व दान मोक्ष फल का देने वाला है।

पात्र दान

मुनि, आर्यिका उत्कृष्ट श्रावक कहिये ऐलक क्षुल्लक (व्रति श्रावक) इनको भक्ति कर विधि पूर्वक दान देना यह पात्र दान है। इनको आहार देना आहार के सिवाय कमंडलु देनापीछी देना, पुस्तक देनी और आर्यिकाओं को वस्त्र (साड़ी) देनी। क्षुल्लक को उसकी वृत्ति के अनुसार कोपीन (लंगोटी) देनी चादर धोती दौहर चटाई देनी यह सर्व पात्र दान है। इसका फल भोग भूभि में सुख भाग स्वर्गादिक म जाना और परम्पराय (मोक्ष का कारण है)

समदान

देखो जब गरीब से गरीब ब्राह्मण भी किसी वैष्णव मत वाले के पास जावे तो बड़े बड़े सेठ साहूकार पहले आप उनको प्रणाम करे है बैठने को उच्च स्थान देवे हैं। इसी तरह जैनियों को भी चाहिये कि जब कोई गरीब से गरीब भी धर्मात्मा जैनी या जैन पंडित या अपनी जैन पाठशाला का अध्यापक अपने पास आवे तो धन का मद छोड़ पहले आप उसको जय जिनेन्द्र करे। और बड़े सत्कार से उनको अच्छा स्थान बैठने को देवे। और आवने का कारण पूछे और अपनी शक्ति अनुसार उनकी मदद करे और गौ बच्छे समान उनसे प्रीति राखे उनसे जैन धर्म की चर्चा करे और जो यात्रा जाने वाले निर्धन जैनी या विधवा जैन स्त्री हो उन को रेल का किराया रास्ते का खर्च देवे। जैनी पंडितों तथा दूसरे गरीब जैनियों को भोजन देवे वस्त्र देवे, आजीविका लगवाय देवे, नौकरी करवाय देवे, दलाली बताय देवे, पूंजी देकर दुकान कराय देवे। थोडे सूद पर रक ... । उनको कपड़े से या अनाज से तं ... नजवाय देवे, जो

इष्ट छत्तीसी

मंगलाचरण ।सोरठा।

प्रणमूं श्री अरहंत, दया कथित जिन धर्म को।
गुरु निर्ग्रंथ महन्त, अवर न मानूं सर्वथा।
विनगुण की पहिचान, जाने वस्तु समानता।
तातैं परम बखान, परमेष्ठी के गुण कहूं।।
राग द्वेषयुत देव, मानें हिंसाधर्म पुनि।
सग्रन्थिनि की सेव, सो मिथ्याती जग भ्रमें।।

अर्थ - दयामय जैन धर्म्म को प्रकाश करने वाले श्री अरहंत देव और परिग्रह रहित गुरू को मैं नमस्कार करूं हूं अन्य (कुदेवादिक) को नही।।

क्योंकि बिना गुणों की पहिचान के समस्त अच्छी बुरी वस्तु बराबर मालूम होती है इसलिये पंचपरमेष्ठि को परमोत्कृष्ट जानकर मैं उनके गुण वर्णन करूं हूं।।

जो राग द्वेष युक्त देव और हिंसारूप धर्म के मानने वाले हैं और परिग्रह सहित गुरू की सेवा करते हैं वह मिथ्याती जगत में भ्रमें हैं।

अर्थ अर्हंत के 46 मूल गुण (दोहा)

चौंतीसों अतिशय सहित, प्रातहार्य पुनि आठ।
अनन्त चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ।।1।।

अर्थ - 34 अतिशय 8 प्रातिहार्य 4 अनन्तचतुष्टय यह अर्हंत के 46 मूलगुण होते हैं।

34 अतिशय (दोहा)

जन्में दश अतिशय सहित, दश भए केवल ज्ञान।

चौदह अतिशय देवकृत, सब चौंतीस प्रमान।।2।।

अर्थ – 10 अतिशय संयुक्त जन्मते हैं 10 केवल ज्ञान होने पर होते हैं 14 देव कृत होते हैं अर्हंत के यह 34 अतिशय होते हैं।

जन्म के 10 अतिशय ।दोहा।

अतिसुरूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहित वचन अतौल बल, रूधिर श्वेत आकार ।।3।।
लक्षण सहस अरु आठतन, समचतुष्टकसंठान।
बज्रवृषभ नाराच युत, ये जन्मत दश जान।

अर्थ – 1. अत्यन्त सुन्दर शरीर, 2 अतिसुगन्धमय शरीर, 3 पसेव रहित शरीर 4 मल मूत्र रहित शरीर 5 हितमित प्रिय बचन बोलना 6 अतुल्यबल 7 दुग्धवत् श्वेत रूधिर 8 शरीर में 1008 लक्षण, 9 सम चतुरस्रसंस्थान शरीर, अर्थात अरहन्त के शरीर के अंगों की बनावट स्थिति चारों तरफ से ठीक होती है किसी अंग में भी कसर नहीं होती 10 बज्रवृषभनाराचसंहनन यह दश अतिशय अर्हंत के जन्म से ही उत्पन्न होते हैं।

नोट – यहां बालकों को यह समझ लेना चाहिये कि यह जन्म के 10 अतिशय हर एक अरहन्य (केवली) के नहीं होते सिवाय पंचकल्याणक को प्राप्त होने वाले तीर्थंकरों के जितने दूसरे क्षत्री वैश्य और ब्राह्मण मुनि पदवी धार केवल ज्ञान को प्राप्त होते हैं, या जो विदेह क्षेत्र में तीन कल्याणक या दो कल्याणक वाले तीर्थंकर होते हैं उनके यह जन्म के 10 अतिशय सारे नहीं होते उनका जन्म समय खून (रूधिर) लाल होता है सफेद नहीं उनके निहार (टटी फिरना पिशाब करना) भी होता है उनके पशेव भी आता है उनके शरीर में जन्म समय1008 लक्षण नहीं होते, वह जन्म समय अतुल बलके धारी नहीं होते, अतुल बल उसको कहते हैं जिसके बल की तुलना कहिये अन्दाजा न हो, चक्रवर्ती, नारायण के बल का तुलना (अन्दाजा) होता है पंच कल्याणक को

प्राप्त होने वाले तीर्थंकर में अतुल (बेहद) बल होता है देखो श्री नेमिनाथ ने नारायण को एक अंगुली से झूला दिया था।

पस यह जन्म के पूर 10 अतिशय उनही अरहन्त में जानने जो पहले भव या भवों में तीर्थंकर पदवी का बन्ध बांध पंच कल्याणक को प्राप्त होने वाले तीर्थंकर उत्पन्न होय केवल ज्ञान को प्राप्त होते हैं।।

केवल ज्ञान के 10 अतिश्य ।दोहा।

योजन शत इक में सुभिख, गगन गमन मुखचार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार।।5।।
सब विद्या ईश्वर पनों, नाहि बढै नख केश।
अनिमिषट्टग छाया रहित, दश केवल के वेश ।।6।।

अर्थ – 1 एक सौ योजन सुभिक्ष, अर्थात जिस स्थान में केवली तिष्ठे उन से चारों तरफ सौ सौ योजन सुकाल होता है, 2 आकाश में गमन 3 चार मुखों का दीखना अर्थात अर्हंत का मुख चारों तरफ से नजर आता है 4 अदया का अभाव, 5 उपसर्ग रहित 6 कवल (ग्रास) आहार वर्जित, 7 समस्त विद्याओं का स्वामी पना 8 नख केशों का नहीं बड़ना, 9 नैत्रों को पलकें नहीं टिमकना, 10 छाया कर रहित शरीर। यह दश अतिशय केवल ज्ञान के होने पर उत्पन्न होते हैं।

देव कृत 14 अतिशय ।।दोहा।।

देव रचित है चार दश, अर्द्ध मागधी भाष।
आपस माहीं मित्रता, निर्मल दिश आकाश।।7।।
होत फूल फल ऋतु सबैं, पृथिवी काच समान।
चरण कमल तल कमल ह्वै, नभ तैं जय जय बान।। 8।।
मन्द सुगन्ध बयारि पुनि, गन्धोदक की वृष्टि।

भूमि विषे कंटक नहीं, हर्ष मई सब सृष्टि।।9।।
धर्म चक्र आगे रहै, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरहन्त के, यह चौतीस प्रकार ।।10।

अर्थ - 1. भगवान् की अर्द्धमागधी भाषा का होना, 2 समस्त जीवों में परस्पर मित्रता का होना, 3. दिशा का निर्मल होना, 4. आकाश का निर्मल होना, 5. सब ऋतु के फल फूल धान्यादिक का एक ही समय फलना, 6. एक योजन तक की पृथ्वी का दर्पणवत निर्मल होना, 7. चलते समय भगवान के चरण कमल के तले स्वर्ण कमल का होना, 8. आकाश में जय जय ध्वनि का होना, 9. मन्द सुगन्ध पवन का चलना, 10. सुगंध मय जल की वृष्टि का होना, 11. पवनकुमार देवन कर भूमि का कण्टक रहित करना, 12. समस्त जीवों का आनन्द मय होना। 13. भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना, 14 छत्र चमर ध्वजा घण्टादि अष्टमंगल द्रव्यों का साथ रहना। इस प्रकार 34 अतिशय अर्हंत तीर्थंकर के होते हैं।

8 प्रातिहार्य्य ।।दोहा।।

तरू अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार ।
तीन छत्र शिर पर लसैं, भामंडल पिछवार।।11।।
दिव्यध्वनि मुख तैं खिरे, पुष्प वृष्टि सुर होय।
ढारें चौंसठि चमर जख, बाजें दुंदुभि जाये ।।12।।

अर्थ - 1. अशोक वृक्ष का होना जिस क देखने से शोक नष्ट हो जाय, 2. रत्नमय सिंहासन, 3 भगवान के सिर पर तीन छत्र का फिरना, 4. भगवान के पीछे भामंडल का होना, 5. भगवान के मुख से निरक्षरी दिव्यध्वनि का होना, 6 देवों कर पुष्प वृष्टि का होना, 7. यक्ष देवों कर चौंसठ चवरों का ढोलना, 8. दुन्दुभि बाजों का बजना यह 8 प्रातिहार्य हैं।

समवशरन की 12 सभा।

समवशरण में गंधकुटी के हर तरफ गोलाकार प्रदक्षिणा रूप 12 सभा होय हैं।

1. पहली सभा में गणधर और अन्य मुनि विराजे हैं।
2. दूसरी सभा में कल्पवासी देवों की देवी तिष्ठे हैं।
3. तीसरी सभा में आर्य्यिका और श्राविकायें तिष्ठे हैं।
4. चौथी सभा में ज्योतिषी देवों की देवी तिष्ठे हैं।
5. पांचवी सभा में व्यंतर देवों की देवी तिष्ठे हैं।
6. छठी सभा में भवनवासी देवों की देवी तिष्ठे हैं।
7. सातवीं सभा में 10 प्रकार के भवनवासी देव तिष्ठे हैं।
8. आठवीं सभा में 8 प्रकार के व्यंतर देव तिष्ठे हैं।
9. नवमी सभा में चन्द्र सूर्यादि विमानों में रहने वाले 5 प्रकार के ज्योतिषी देव तिष्ठे हैं।
10. दशवां सभा में 16 स्वर्गो के वासी इन्द्र और देव तिष्ठे ह ।
11. ग्याहरवीं सभा में मनुष्य तिष्ठे हैं।
12. बाहरवीं सभा में पशु, पक्षी, और तिर्यंच तिष्ठे हैं।

नोट - समवशरण में इन का आना जाना लगा रहता है कोई आवे है, कोई जावे है कोई धर्मोपदेश सुने है समवशरण का यह अतिशय है। कि समवशरण में रात दिन का भेद नहीं हर वक्त दिन ही रहे है रात्री नहीं होती और कितने ही देव मनुष्य आ जावें परन्तु समवशरण में सब समा जाते हैं जगह का अभाव कभी भी नहीं होता है और समवशरण में मोह, भय, द्वेष, विषयों की अभिलाषा, रति, अदेख का भाव, छींक, जम्माई, खांसी डकार, निद्रा, तंद्रा

(उघना) क्लेश, विमारी, भूख, प्यास आदि किसी जीव के भी अकल्याण तथा विघ्न नहीं होता और जैसे जल जिस वृक्ष में जाता है उसी रूप हो जाता है वैस ही भगवान की वाणी अपनी अपनी भाषा में सब समझे हैं।

अनन्त चतुष्टय ।।दोहा।।

ज्ञान अनन्त अनन्त सुख, दरशअनन्त प्रमान।
बल अनन्त अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान ।।13।।

अर्थ - 1. अनन्त दर्शन, 2. अनन्तज्ञान, 3 अनन्तसुख, 4 अनन्त वीर्य्स इतने गुण जिस में हो वह अर्हंत हैं चतुष्टयनाम चार का है अनन्त चतुष्टयनाम चार अनन्त का है अनन्त नाम जिस का अन्त न हो अर्थात् जिस की कोई हद न हो जब यह आत्मा अरहन्त पद को प्राप्त होता है तब इसको अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति होती है।

18 दोष वर्णन ।दोहा।

जन्म जरां तिरषा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद ।।14।।
राग द्वेष अरू मरण पुनि, यह अष्टा दश दोष।
नाहिं होत अरहंत के सो छवि लायक मोष ।।15।।

अर्थ - 1. जन्म, 2 जरा, 3 तृषा, 4 क्षुधा 5. आश्वर्य्य अरति (पीडा) 7. खेद (दुख), 8. रोग, 9 शोक, 10 मद, 11 मोह, 12 भय, 13 निद्रा, 14 चिन्ता, 15 पसीना, 16 द्वेष, 17 प्रीति, 18, मरण। यह 18 दोष अरहंत के नहीं होते।

अथ सिद्धों के 8 मूल गुण । सोरठा।

समकित दरसन ज्ञान अगुरू लघु अवगाहना।
सूक्षम वीरजवान निरावाध गुण सिद्ध के ।।16।।

अर्थ - 1. सम्यक्त्व, 2 दर्शन, 3 ज्ञान, 4 अगुरूलघुत्व, 5 अवगाहनत्व, 6

सूक्ष्मपना, 7 अनंत वीर्य्य, 8. अध्यायाधत्व यह सिद्धों क 8 मूल गुण होते हैं।

अर्थ आचार्य के 36 मूल गुण । दोहा।

द्वादश तप दश धर्म युत, पाले पंचाचार।
षट् आवशिक त्रय गुप्ति गुण, आचारज पदसार ।।17।।

अर्थ - तप 12, धर्म 10, आचार 5, आवश्यक 6, गुप्ति 3। यह आचार्य्य के 36 मूलगुण होते हैं।

12 तप ।दोहा।

अनशन ऊनोदर करे, व्रत संख्या रस छोर।
विविक्तशयन आसन धरे, कायक्लेश सुठोर ।।18।।
प्रायश्चित धर विनय युत, वैयाव्रत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचार के, धरे ध्यान मन लाय ।।19।।

अर्थ - 1 अनशन (न खाना), 2 ऊनोदर (थोडा सा खाना), 3 व्रतपरिसंख्यान, 4 रस परित्याग, विविक्तशय्यासन, 6. कायक्लेश, (यह छै प्रकार का वाह्य तप है) 7. प्रायश्चित, 8 पांच प्रकार का विनय, 9. वैयावृत्य करना, 10 स्वाध्याय करना, 11 व्युत्सर्ग (शरीर से ममत्व छोड़ना), 12 ध्यान (यह छै प्रकार का अन्तरंग तप है)

10. धर्म (दोहा)

क्षमा मारदव आरजव, सत्य बचन चित्त पाग।
संयम तप त्यागीसरब, आकिंचन तिय त्याग।।20।।

अर्थ - उत्तम क्षमा, 2 मार्दव, 30 आर्जव, 4 सत्य, 5 शौच, 6. संयम, 7 तप, 8 त्याग, 9 आकिंचन्य, 10 ब्रह्मचर्य्य यह दश प्रकार के उत्तम धर्म हैं।

6 आवश्यक ।दोहा।

समताधर बन्दन करे, नानास्तुति बनाय।

प्रति क्रमण स्वाध्याय युत, कायोत्सर्ग लगाय।।21।।

अर्थ – 1. समता (समस्त जीवों में समता भाव रखना), 2 वन्दना, 3 स्तुति (पंचपरमेष्ठी की स्तुति करना) 4. प्रतिक्रमण (लगे हुए दोषों का पश्चाताप करना) 5. स्वाध्याय, 6 कायोत्सर्ग ध्यान करना यह छै आवश्यक है।

5 आचार और 3 गुप्ति ।दोहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, बीरज पंचाचार।

गोपे मन बचन काय को, गिणछतीस गुणसार ।।22।।

अर्थ – 1. दर्शनाचार, 2. ज्ञानाचार, 3 चरित्राचार, 4 तपाचार, 5 वीर्य्याचार, यह पांच आचार हैं और सर्वसावद्य योग जो पाप सहित मन, वचन, काय, की प्रवृति उसका रोकना सो गुप्ति है अर्थात् 1 मनोगुप्ति मन को वश में करना, 2 वचन गुप्ति (वचन को वश में करना), 3. कार्य गुप्ति (शरीर को वश में करना) यह तीन गुप्ति है।

तीन गुप्ति के अतिचार ।

1. रागादि सहित स्वाध्याय में प्रवृति तथा अंतरंग में अशुभ परिणाम इत्यादि मनोगुप्ति के अतिचार है।

2. द्वेष से तथा राग से तथा गर्व से मौनधारण करना इत्यादि बचन गुप्ति के अतिचार है।

3. असावधानी से काय की क्रिया का त्याग करना तथा एक पैर से खड़ा रहना तथा जीव सहित भूमि में तिष्ठना तथा गर्वथ की निश्चल तिष्ठना तथा शरीर में ममता सहित कायोत्सर्ग करना तथा कार्यात्सर्ग के जो 32 दोष है उनमें से कोई दोष लगावना इत्यादि काय गुप्ति के अतिचार है जैन के मुनि इत्यादि दोष टार तीन गुप्ति का पालन करते हैं। यह आचार्य के 36 मूल गुण कहे।

अथ उपाध्याय के 25 मूल गुण ।दोहा।

चौदह पूर्व को धरे, ग्यारह अंग सुजान।

उपाध्याय पच्चीस गुण, पढ़े पढ़ावे ज्ञान।।23।।

अर्थ – उपाध्याय 11 अंग 14 पर्व के धारी होते हैं इनको आप पढ़े औरों को पढ़ावें।

11 अंग ।।दोहा।

प्रथम हि आचारांग गण, दूजा सूत्र कृतांग।

स्थानांग तीजा सुभग, चौथा समवायांग ।।24।।

व्याख्याप्रज्ञप्ति पञ्चमो, ज्ञातृकथा षट आन।

पुनि उपासकाध्ययन है, अन्त कृत दश ठान ।।25।।

अनुत्तरण उत्पाद दश, विपाक सूत्र पहिचान ।

बहुरि प्रश्न व्याकरण युत, ग्यारह अंग प्रमान ।।26।।

अर्थ – 1 आचारांग, 2 सूत्रकृतांग, 3 स्थानांग, 4 समवायांग, 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति, 6 ज्ञातृकथांग, 7 उपासकाध्ययनांग, 7 अन्तकृतदशांग, 8 अनुत्तरोत्पाद दशांग, 10 प्रश्न व्याकरणांग, 11 विपाकसूत्रांग। यह ग्यारह अंग हैं।

चौदह पूर्व ।दोहा।

उत्पाद पूर्व अग्रायणी, तीजो वीरज बाद।

अस्ति नास्ति परवादपुनि, पञ्चमज्ञान प्रवाद ।।27।।

छट्टा कर्म परवाद हैं, सत्तप्रवाद पहिचान।

अष्टम आत्म प्रवाद पुनि, नवमोप्रत्याख्यान।। 28।।

विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्व कल्याण महन्त।

प्राणवाद क्रिया बहुरि, लोक विंदु है अन्त ।।29।।

अर्थ - 1. उत्पाद पूर्व, 2 अग्रायणी पूर्व, 3. वीर्य्यानुवाद पूर्व, 4. अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व, 5. ज्ञान प्रवाद पूर्व, 6. कर्म प्रवाद पूर्व, 7. सत्यप्रवाद पूर्व, 8. आत्मप्रवाद पूर्व, 9. प्रत्याख्यान पूर्व, 10 विद्यानुवाद पूर्व, 11. कल्याणवाद पूर्व, 12 प्राणानुवाद पूर्व, 13 क्रियाविशाल पूर्व, 14 लोक बिन्दु पूर्व । यह 14 पूर्व हैं।

अथ सर्व साधु के 28 मूल गुण ।दोहा।

पंच महाव्रत समितिपण, पण इंद्रियन का रोध।

षट् आवश्यक साधु गुण, सात शेष अवबोध ।।30।।

अर्थ - 5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रियों का रोकना, 6 आवश्यक, 7 अवशेष यह 28 मूलगुण साधु के जानो।

पंचम महाव्रत ।दोहा।

हिंसा अनृत तस्करी, अब्रह्म परिग्रह पाप।

मन वचनतेंत्यागवो, पञ्च महाव्रत थाप ।।31।।

अर्थ - अहिंसा महाव्रत, 2. सत्यमहाव्रत, 3 अचौर्य महाव्रत, 4 ब्रह्मचर्य महाव्रत, 5 परिग्रहत्याग महाव्रत यह पांच महाव्रत है।

नोट- मुनों के वास्ते यह पांच महाव्रत हैं श्रावक के वास्ते यह पांच अणुव्रत हैं इन पांच व्रतों के बर खिलाफ पांच पापों की पांच कथा बड़े सुकुमाल चरित्र में पृष्ट 22 से 32 तक लिखी है जो मोती समान छपा हुवा हमारे यहां से 11 रूपये में मिलता है जिसे वह कथा देखनी हो उसमें देखे।

5 समिति ।दोहा।

ईर्य्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान।

प्रतिष्ठापनायुत क्रिया, पांचों समिति विधान।

अर्थ - 1. ईर्य्या समिति - परमागम की आज्ञा प्रमाण प्रमाद रहित यत्नाचार से जीवों की रक्षा निमित्त भूमि को देख कर गमन करना तिस का नाम ईर्य्या समिति है।

2. एषणा समिति - जिव्हा इंद्रिय को लपटता को याग आचारांग सूत्र के हुकम प्रमाण उदमादि 46 दोष 32 अंतराय टार आहार करना तिसका नाम एषणा समिति है।

4. आदान निक्षेपणा समिति - प्रमाद रहित यत्नाचार से शरीरादिक मयूर पिच्छिका, कमंडलु, शास्त्र यह उपकरण जीव हिंसा के कारण टार सहज से रखने से उठावने तिसका नाम आदान निक्षेपणा समिति है।

5. प्रतिष्ठा पना समिति - जीव रहित भूमि विषे तथा जहां जीवों की उत्पत्ति होने का कारण न हो ऐसी भूमि विषे यत्नाचार से मल मूत्र, कफ, नासिका का मल नख, केशादि क्षेपना (डालना) तिस का नाम प्रतिष्ठपना समिति है यह पांच समिति है।

5 समिति के अतिचार (दोष)

1. गमन करते समय भूमि को भले प्रकार नहीं देखना और वन, पर्वत, वृक्ष, नगर, बाजार तथा मनुष्यों का रूप आदि देखते हुए चलना इत्यादि ईर्यासमिति के अतिचार है।

2. देश, काल के योग्य अयोग्य का नहीं विचार करके पूर्ण सुने बिना पूर्ण जाने बिना बोलना इत्यादि भाषा समिति के अतिचार है।

3. उदमादि कोई दोष लगाय तथा रसकी लपटता से तथा प्रमाण से अधिक भोजन करना इत्यादि एषणा समिति के अतिचार है।

4. भूमि तथा शरीरादि उपकरणों को शीघ्रता से उठावना मेलना अच्छी तरह नेत्रों से नहीं देखना तथा मयूर पिच्छिका से भले प्रकार झाडन पूंछन नहीं करना जलदी से करना इत्यादिक आदान निक्षेपणा समिति के अतिचार हैं।

5. अशुद्ध भूमि विषे तथा जीवों सहित भूमि विषे जहां जीवों की उत्पत्ति होने का कारण हो ऐसी भूमि विषे मल मूत्र दिक्षेपना (डालना) इत्यादि प्रतिष्ठापना समिति के अतिचार हैं जैन के मुनि इत्यादि दोषों को दूरकर पांचों समिति का पालन करते हैं।

5. इन्द्रियदमन और बाकी ।दोहा।

स्पर्शन रसना नासिका, नयन श्रोत्र का रोध।
षट आवशि मंजन तजन, शयन भूमि को शोध ।।33।।
वस्त्र त्याग कचलौंच अरु, लघु भोजन इकबार।
दांतन मुख में ना करें, ठाडे लेय अहार ।34।
बरणे गुण आचार्य में, षट आवश्यक सार।
ते भी जानो साधु के, ठाइस इस परकार।।35।।
साधर्मी भविपठन को, इष्टछतीसी ग्रन्थ।
अल्पबुद्धि बुधजन रचो, हितमित शिवपुर पन्थ ।36।

अर्थ - 1. स्पर्शन (त्वक्), 2 रसना, 3 घ्राण 4. चक्षु, 5 श्रोत्र इन पांच इन्द्रियों को वश करना। और 1 यावज्जीव स्नान त्याग, 2. भूमि पर सोना, 3 वस्त्रत्याग, 4 केशों का लौंच करना, 5 एक बार लघु भोजन करना, 6 दांतन नहीं करना, 7 खड़े आहार लेना सात तो यह और 6 आवश्यक जो आचार्य्य के गुणों में वर्णन कर चुके हैं इस प्रकार 28 मूल गुण सर्व सामान्य मुनि आचार्य्य और उपाध्याय के होते हैं।

तीन गुप्ति का प्रश्न उत्तर -

यदि यहां कोई यह प्रश्न करे कि पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति यह तेरह प्रकार के चारित्र पालन वाले जो हमारे दिगम्बर गुरू (मुनि) (साधु) उनके मानने वाले हम तेरह पंथी जैनी कहलाते हैं सो मुनि के 28 मूल

गुणों में तीन गुप्ति नहीं कही सो क्या जैन मुनि तीन गुप्ति नहीं पालतें ?

इसका उत्तर यह है कि जैन के सर्व साधु अपनी शक्ति समान तीन गुप्ति का पालन करते हैं उन तीन गुप्कि का वर्णन आचार्य के गुणों में हो चुका है यहां साधु के गुणों में दुबारा इस वास्ते नहीं लिखा कि आचार्य के तो वह मूल गुणों में श्यामिल है आचार्य को उन का पालना लाजमी है जो आचार्य्य तीन गुप्ति को न पाले उस का आचार्य पद खंडित है और साधु के यह तीन गुप्ति उत्तर गुणों में हैं अगर किसी साधु से कोई गुप्ति किसी काल में न भी पले तो उससे उसका साधुपना खंडित नहीं होता देखो हरिवंश पुराण सफा 572 अतिमुक्त महामुनि अवधि ज्ञान ने कंश की राणी जीवंजशा को कहा अहो जींवजशा जिस देवकी के यह वस्त्र तू मुझे दिखाती है इसके पुत्र तेरे पति और पिता के मारन वाला होयगा और भी श्रेणिक चरित्र आदि ग्रंथो में मुनियों से गुप्ति न पलने की ऐसी अनेक कथा है सो मुनि के यह तीन गुप्ति मूल गुणों में नहीं है उत्तर गुणों में है सर्वजैन मुनि इन तीन गुप्ति का अपनी शक्ति अनुसार पालन करे हैं परन्तु किसी काल में किसी साधु से नहीं पलती इस वास्ते इनको साधुओं के मूलगुणों में नहीं लिखा।

इति पंच परमेष्ठि के 143 मूल गुणों का वर्णन समाप्तम्

अर्थ 7 व्यसन का वर्णन

1. जूवा, 2 मांस, 3 मदिरा, 4 गणिका, (रंडी), 5. शिकार, 6 चोरी, 7 परस्त्री।

नोट- इनका खुलासा इस प्रकार है 1 जूवा उसे कहते है जो पैसा, रूपैया, गिनी, नोट, जेवर वगैरा या मकान, जमीन, असबाब, कपड़ा, हाथी, घोडा स्त्री वगैरा धन को दाव पर लगाकर खेलना या ताश शतरंगज चौपड़ घुड़दौड, अंटा आदि दूसरे का धन लेने और निज धन देने की बाजी लगाकर खेलना, पानी का सट्टा अफीम का सट्टा, रूई अनाज सोना चांदी आदि

का सट्टा बधनी यह सब जूवा है जिसके जूवे का त्याग हो वह किसी प्रकार का सट्टा या वधनी का सौदान नहीं कर सकता और न घुडदौड़ का टिकट ले सकता न किसी वस्तु की लाटरी में आप हिस्सा ले सकता है वह सब जूवा है जिसके पीछे जूवे का ऐब लग जाता है वह मेहनत करके कमाने लायक नहीं रहता वह जो कमाता है इकट्ठा करके सदा सब जूवे में हार आता है जुवारी सदा गरीब दु:खी रहता है सारी उमर तडफता ही मरता है जब उसके पास धन नहीं रहता तब चोरी करने लगता है दूसरे के बच्चों को जरा से धन के वास्ते मार डालता है इसलिये राजा कर सूली दिया जाता है कैद किया जाता है जुवारी का कोई ऐतबार नहीं करता उसकी कोई इज्जत नहीं करता ।

(2) मांस का खाना अभक्ष्य में लिखा है यहां दुबारा वास्ते बयान किया है कि जिसके मुंह के खून लग जावे जैसे राजा के मुंह के बच्चों का खून लग गया था सारे बच्चे नगर के खा गया था इस का नाम मांस व्यंजन है।

(3) मद का अर्थ यह है कि ऐसी वस्तु खानी जिससे नशा पैदा हो यानी बेहोशी या मस्त होने को बदचलनी करने को नशे वाली चीज खानी इसका नाम मद है जैसे माजून (माजुम) खाकर नशई बनना भंग पीकर नशई बनना ताड़ी पीकर नशई बनना शराब पीकर नशई बनना अफीम खाकर नशइ बनना यह सर्व मद् में है। जो मनुष्य अपनी वायु बादी का बदन तन्दुरूस्त रखने को आखों से पानी बहना कम करने को अफीम खाने लगते है या ऊपर बयान की जो वस्तु उनमें से कोई अपनी जान बचाने बीमारी दुर करने को खानी, वह मद में शामिल नहीं मद का मतलब ही नशे बाज बनने का है और यहां यह लेख व्यसन में है व्यसन का अर्थ ऐब का है जान बचाने बिमारी दूर करने को कोई नशीली वस्तु खाना ऐब नहीं है परन्तु आम्नाथ विरूद्ध न खावें। ग्रंथों के लेख और आचार्यो के आशय को समझना बड़ा कठिन है एक लफ्ज के अनेक अर्थ होते हैं जहां जो संभवे वहां वही लेना चाहिये यह जो जितने मत भेद हुये है सब असंभव अर्थ के ग्रहण करने से ही

हुये हैं।

4. रंडी बाजी करना जिसको रंडी बाजी की लत लग जावे यानि जिस को यह ऐब लग जावे वह अपने सारे धन को खो देता है अपनी स्त्री के पास नहीं जाता उससे मुहब्बत नहीं रहती जब उस स्त्री को काम सतावे उस से न रहा जावे तो ऐसी अनेक स्त्री खाबिंद को बदचलन देख उसके पास रंडी आती जाती देखकर वह भी ऐबदार हो जाती है बदचलन की सोहबत से दूसरा भी बदचलन हो जाता है, पस उसकी स्त्री भी बदचलन हो जाती है वह नौकरों से संगम करने लग जाती है दूसरे रंडीबाज के आतशक हो जाती है उसका वीर्य्य भुने अनाज की तरह हो जाता है उसमें हमल रखने का गुण नहीं रहता इससे रंडी बाज के औलाद नहीं होती और ऐबों में तो धन ही जाता है परन्तु रंडी बाजी में धन भी जाता है वंश भी नहीं चलता शरीर में आतशक होने से अधडंग मारा जाता है जवान ही मर जाता है रंडीबाज सारे ही जवान मरते हैं पस रंडीबाजी दुनिया में सख्त ऐब है।

5. चोरी किसी का धन नकब लगाकर (ऐंडा देकर) या किसी के घर में बड़कर किसी का धन तथा वस्तु ले आना किसी की जेब काट लेनी किसी का भोले मार लेना किसी का लेकर मुकर जाना अमानत में खियानत करना किसी के नाम झूंठ लिखना किसी के ऊपर झूंठी न लिश करनी किसी को कम तोल देना दूसरे का माल जियादा तोल लेना किसी अनजान का बहु मूल्य धन थोड़ी कीमत में लेना चोरी का माल लेना यह सब चोरी है चोर का ऐतवार माता पिता भी नहीं करते सारी दुनिया में चोर का मूंह काला होता है अनेक राजा चोर को फांसी दे देते हैं। कैद कर देते हैं।

6. खेटक नाम शिकार खेलने का है जीव तो मांस के व्यसनी भी मारते हैं खेटक उससे अलग इस कारण से है कि जो अपनी तबियत बहलाने खुश करने को तमाशा देखने के लिये किसी जीव को मारना यह खेटक है यानि जिसको ऐसा ऐब लग जाये कि दूसरे जानवरों को मारकर या मारते

हुवों को देखकर अपनी तबियत बहलाया करे खुश हुवा करे यह सब खेटक है शिकार करते हुये तमाशा देखना या किसी को फांसी देते हुये कतल करते हुये अपनी तबियत खुश करने के लिये देखना यह सब खेटक है फौज में नौकरी करनी दुश्मनों को मारना या रहजनी करना हिंसा रूप पाप में शामिल है खेटक में नहीं। जो आदमी या जानवर अपने को या अपनी स्त्री बच्चों को मारने या खाने को आवे तब अपने ताई या अपने बाल बच्चों को बचाने के वास्ते उसको मारना उसका संहार करना यह खेटक नहीं व्यसन के मायने ऐब के हैं अपनी जान बचाना ऐब नहीं हैं।

(7) परनारी, परनारी का अर्थ जिस स्त्री के खाविंद हो उसके साथ रमना तिल का नाम परस्त्री गमन है इसी कारण से रंडी को अलग लिखा है क्योंकि उसके मर्तार नहीं परस्त्री के मायने दूसरे की जोरू है रंडी किसी की जोरू नहीं अगर सारी स्त्री ही परस्त्री में होवें तो फिर अपना ब्याह करना परस्त्री व्यसन में हो जावे सो इसका मतलब यही है कि दूसरों की जोरूओं से रमने का ऐब लग जाना जिसको यह ऐब लग जाता है वह अपनी स्त्री जोगा घरघाट का नहीं रहता और जो वीर्य का खराब होना औलाद पैदा करने के काबिल न रहना आतशक हो जाना अधडंग मारना जो ऐब रंडीबाजी में है वह भी इसमें है यह अलग इस वास्ते है कि रंडीबाजी में तो सिरफ धन का नाश वंश का कान चलना बीमारी हो जाना ही है इस से राजा से कतल करा जाना कैद करना अनेक राजा परस्त्री सेवने वाले को जीवते हुये ही को पिंजरे में डालकर पिंजरा दरखत में लटका देते हैं जहां वह तड़फ तड़फ कर सूक सूक कर मरता है और परस्त्री के वारिसों कर कतल किया जाना लाठियों से मारा जाना इतना इनाम इसमें और भी फालतू है इसीलिये इसे महा व्यसन जानकर सबसे पीछे लिखा है कि यह सब व्यसनों का बाप महा व्यसन महाऐब महापाप है।

अथ 22 अभक्ष्य के त्याग का वर्णन

(आचार्य्य रचित प्राकृत पाठ)

यत: पंचुबरी चउविगई, हिम विस करए असव्वमट्टीये। रयणी भोउण गंचिउ, बहूबाउ अणंत संधाणं।।1।। घोलवडा वायंगण, अमुणि अनामाणि फुल्ल फलयाणि। तुच्छफलं चलि अरसं वज्झह वज्झाणि बीवासं।।2।।

भाषा छंद वंद पाठ (छप्पै छंद) ।

वीरा घोलवरा निशिभोजन, बहुवीजा बैंगन संधान। बर पीपर उमर कठुमर, पाकर फल जोहोत अजान। कंदमूल माटी विष आमिष मधु माखन और मदिरापान। फल अतितुच्छ तुषार चलितरस, जिनमत यह बाईस अखान।

नोट- यह सब 22 अभक्ष्य कहलाते हैं।

जो इन बाईस अभक्षों में से सब का या किसी एक का त्याग करे तो इन का खुलासा इस प्रकार है।

प्राकृत पाठ का अर्थ

पंचुवरी - पांच उदुंवर वर, पीपर, ऊमर, कठूमर, पाकर। वउविगई-मद्य, मांस, मधु, मक्खन, 10 हिम-वरफ 11 विस-जहर 12 करए-करका (ओला) 13 सव्व मट्टीये-मांटी, 14 रयणी भोअण-रात्रि भोजन 15 गंचिअ-कंद मूल, 16. बहुबीअ-बहुवीजा 17 अणंत संधाण-आचार वगैरह 18 घोलवड़ा- विदल 19 वायंगण-बैंगण, 20 अमुणि अनामाणि फुल्ल फलयानि- अजान फल 21. तुच्छ फलं-तुच्छ फल, 22

चलिअरसं-चलितरस।

1. उमर गुल्लर को कहते हैं, 2 पीपल फल, 3 बड़ फल, 4 कठूमर जो काट फोड़ कर निकले, जैसे सिंवलफल कटहलबढल जिसके फलसे पहले फूल नहीं आवे।

5. पाकर फल यह यनान ईरान आदि में बहुत होता है इस का जिकर यूनानी हिकमत की किताबों में लिखा है यह पांचों पांच उदंवर कहलाते हैं।

6. मद्य (मदिरा) शराब 7. मांस (आमिष) 8. मधु (शहत) इन तीनों का पहला अक्षर ''म'' है इस वास्ते इनको तीन मकार कहते हैं।

9. वोरा (ओला) (गडा) जो किसी समय आसमान से वर्षा करते हैं।

10. विदल- उड़द, चना, मूंग, मोठ, मसूर, लोविया (रूंहा) (सूंठा) अरहर, मटर, कुथली, वगैरा ऐसे है जिन को तोड़ने से उन के अलग - अलग दो टुकड़े हो जावे उन की दाल, भल्ले, पकौड़ी, पापड़, सींवी, पूड़ा, रोटी, उडदी, बूंदी वगैरा कच्ची दही या छाछ की साथ मिलाकर नहीं खाने या तोरी, टींडे, करेला, घीया, खीरा, ककडी, सेम, वगैरा जितनी सबजी या खरबूजा, तरबूज, सरदा, आम, बादाम, धनियां, चारों मगज, वगैरा ऐसे है जिन के फल के या गुठली के या बीज के या गिरी के तोड़ने से दो टुकडे बराबर बराबर के हो जावे इन को कच्ची दही या छाछ में मिला कर या साथ नहीं खाने यह सब विदल है।

इसमें यह दोष है कि कच्ची दही या छाछ में ऐसी वस्तु मिलाने से जब उस को मुख में दो तो मुख की राल लगते ही उस में अनंत जीवराशि पैदा हो जाती है इसलिये इसके खाने में महापाप लिखा है। यहां इतनी बात समझ लेनी चाहिये कि कच्ची दही या कच्ची छाछ की साथ खाने में दोष है पक्की की साथ खाने में कोई दोष नहीं। अगर दही या छाछ को अलग पकाई जावें और बेसन को अलग पकाकर फिर उनको मिलाकर उनकी कढी बनाकर खावो तो उसमें कोई दोष नहीं कच्ची दही छाछ में कच्चा बेसन मिलाकर कढी

बनाकर मत खाना दही या छाछ पकाकर उसकी साथ दाल सींवी पापड़ पकौड़ी पूड़ा वगैरा एक पहर तक यानि तीन घण्टे तक खा सकते हो उसके बाद में नही। अगर एक बार भोजन में कच्चा दही और दाल वगैरा खाना चाहते हो तो पहले दाल या दाल की बनी हुई वस्तु खालो फिर कुरला करके मुंह साफ हो जाने पर पीछे दही या छाछ खावो या पहले दही या छाछ खाकर कुरलाकर के फिर दाल या दाल की बनी हुई वस्तु खाओ।

11. रात्रि भोजन - इस का खुलासा पहले श्रावक की 53 क्रियाओं में लिखा है वहां से देखो।

12. बहुवीजा जिस फल के बीजों के अलग अलग हर बीज के घर नहीं होय जो फल को चीरते ही गरणदेकर बाहिर आपडे जैसे अफीम का डोडा, धतूरे का फल आदि यह बहुवीजे फल अकसर जहरीले होते हैं इसलिये यह अभक्ष्य है।

13. बैंगन 14. चारपहर से जियादा देर का संधाना कहिये आचार नहीं खाना।

15. जिस फल को आप न जानता हो कि यह फल खाने योग्य है या नहीं।

16. जमीकंद - जमीकंद उसको कहते हैं जो जमीन के अंदर पैदा हो, जैसे हल्दी, मूंगफली, अदरख, आलू, कचालू (ढिङ्डू), अरबी (गागली) (गुइया) मूली कसेरू भिस (कवलकड़ी) सराल, गाजर, शकरकंदी, रतालु, सबज काली मूसली, हाथीपिच, गठा (पियाज) लसन, शलगम, बीट जिस की विलायत से मोरस (दानेदार) खांड आती है इत्यादि जितने इस किसम के जमीन के अंदर पैदा होते है यह सर्व जमीकंद है यह हरे (सवज) नहीं खाने।।

समझावट

यहां इतनी बात और समझनी कि सुके हुये खाने में कोई दोष नहीं और इन के सबजी पत्ते या फल मसलने मूली के पत्ते या फल मूंगरे अरबी के पत्ते बगैरा

जो जमीन के उपर लगते हैं उन कें खाने में कोई दोष नहीं कंदमूल की बावत शास्त्र में यह लेख है कि इन सबजी में अनंत जीव राशि होती है इस लिये इन के खाने में महा पाप लिखा है परन्तु वह जीव राशि सिरफ हरे में ही होती है सूके में नहीं रहती इस लिये हलदी सुंठ मूंगफली शालम मिसरी वगैरा सूके जमी कंद के खाने में कोई दोष नहीं है चाहे तो सूका हुआ खाओ चाहे सूके हुए को तर करके या पका कर के आखों कोई दोष नहीं है।।

और बाज अनजान जैनी जो ऐसा करते हैं कि यदि उन के कंदमूल का त्याग है अगर उन के भोजन की थाली में या पतल पर कोई आलू वगैरा की भाजी (तरकारी) लाग रख देवे तो यह जो भोजन उस पतल पर या थाली में रखा है सारे को ही अपवित्र मान कर उठा देते हैं। फिर हट कर दुसरी थाली या पतल पर और भोजन रखवा कर खाते हैं सो यह उन की सखत गलती है आलू वगैरा का पक्का हुआ साग रखने से सारा भोजन अपवित्र नहीं हो जाता मुनि भी कन्दमूल भोजन में आया हुआ अलग कर बाकी भोजन खातें हैं, पके हुए जमीकंद में कोई दोष नहीं होता सिरफ रिवाज बिगड़ जाने वा जिह्वा इद्रिय कर कृत कारित दोष उत्पन्न होने के वास्ते उन को खाने के लिये इजाजत नहीं है इस कारण से अगर अपने भोजन की थाली में कोई नावाकिफ आलु वगैरा पक्का हुआ कंद रख भी देवे तो सारा ही भोजन मत उठा दो सिरफ उस कंद को मत खावो बाकी भोजन सब खा सकते हो।।

(17) मिट्टी में पृथ्वी काय के अनेक जीव हैं और मिट्टी खाने से आंत खराब होती हैं यह आंतो में ल्हिसजाती है इसके खाने वाला जल्दी मर जाता है इस वास्तें कच्ची मिट्टी नहीं खानी जिन बच्चों को कच्ची मिट्टी खाने की आदत पड़ जाती है वह दो चार वर्ष में जरूर मर जाते है जिन के बच्चे मिट्टी खाना सिख जावें यदि उनके वारिस उन की जिंदगी चाहें तो जिस तरह को उन का मिट्टी खाना छुड़ावें, एक बच्चा मिट्टी खाता था उस की माता ने मिट्टी में बारीक बहुत सी मिरच डाल छोटी छोटी डली बना सुखाली बहुत सी डली

रसोंत डाल कर इसी तरह कडवीं बनाई जहां बच्चा खेलता चुपके से उनके सामने एक ड़ाली डाल देती बच्चे का मुह खाते ही जलता या कड़वी लगती बस बच्चे ने मिट्टी का खाना छोड़ दिया।।

18. जहर संखिया मीठा तेलिया रसकपूर दाल चिकना विषफल धतूरा अफीम कुचला असटिकनिया वगैरा वस्तु जिन के खाने से आदमी मर जावे वह सर्प जहर में शामिल हैं इन कों बतौर जहर के मरने को खाना उस का नाम जहर अभक्ष्य है जो जहर दवाई में जिंदगी बचाने कों दिये जाते है जैसे दस्त बंद करने को अफीम खांसी गठिया दूर करने को धतूरा के बीजों की गोली जुलाब में जमाल गोटे का जुलाब खून साफ करने को संखिया दिल को ताकत देने को स्ट्रिकनिया दरद रफैं करने को कुचले वाली गौली आदि दवा दी जाती है यह जहर में शामिल नहीं अभक्ष्य के माइने ही खाने योग्य नहीं अपनी जान बचाने को बीमारी दूर करने को दवा खाना अभक्ष्य नहीं नहीं जहर दवा भी है दवा का खाना अभक्ष्य नहीं एक वस्तु में अनेक गुण होते हैं सारे हेय (त्याज्य) नहीं होते जिसे कवज हो उस के वास्ते अफीम का खाना जहर है जिसे दस्त लग रहे हों उसके वास्ते अफीम का खाना अमृत है सो जहर खाने के काबिल नहीं दवा खाने के काबिल हैं।।

19 तुच्छ फल - तुच्छ फल नाम जरा से जामतें फल (निहर) का है, यह अभक्ष्य इस वास्ते है कि अनेक फल ऐसे हैं जो छोटे जहरीले होते है सिरफ बड़े हो कर खाने योग्य होते हैं अगर उन छोटों को खावेतो खाने वालो सीध्र बीमार हो जाता है एसे अनेक फलों का हाल यूनानी हिकमत की किताब में लिखा है, मि कद्दु जिसको कौला या हलवा कद्दु वाज मुलकों में पेठा या कांसी फल भी कहते है यह बहुत छोटा निहर कच्चा नहीं खाना बिमारी करता है बहुत छोटा जरासा ही अलमी का फल भी बिमारी करता है एसे अनेक फल हैं इस वास्ते तुच्छ फल को अभक्ष्य कहा है, परन्तु यहां इतनी बात और समझ लेनी कि जो फल बड़े होकर खाने काबिल नहीं रहते जैसे गुवारे की फली लोबिये

की फली भिंडी घियातोरी टींडे वह छोटे कच्चे खाना तुच्छ में शामिल नहीं यह छोटे ही भक्ष्य हैं बड़े होकर अभक्ष्य यानि खाने काबिले नहीं रहते ।

20. तुषार नाम बरफ का है जो आसमान से गिरती है वह अभक्ष्य है वह जहरीली है और उसमें अनेक जीव त्रस काय के दब कर मर जाते हैं इस वास्ते वह अभक्ष्य है परन्तु यहां इतनी बात और समझनी कि कलकी थरफ जहरीली नहीं होती है न इसमें त्रस जीव गिर कर मरते हैं इस वास्ते यह अभक्ष्य नहीं, छोटे ग्रन्थों में सिरफ नाम होते है इनकी तशरीह बड़े ग्रन्थों में होती है कि वह अभक्ष्य यानी खाने योग्य क्यों नही।

21. चलित रस मोसम गरमी में जिस भोजन पर फूही (ऊलण) आजावे बदबु कर जोव सड़ जावे उसका जायका बदल जावे यह सब चलित रस में हैं जैसे बूसी हुई रोटी तरकारी फूही आई हुई दही सड़ा गला फल इनके खाने से अनेक बीमारी होती है इनमें अनन्त सूक्ष्म जीव (जिरम) पैदा हो जाते हैं ऐसी सब वस्तु अभक्ष्य है।

नोट - जो जीजां खमीर उठाकर बनाई जाती है जैसे मैदे को घोल कर खमीर उठाकर जलेबी बनाते हैं, पीठी को कई दिन तक रख कर खमीर उठाकर खट्टी कर उसकी उडदी बनाते हैं। बेर सड़ा कर उसका खमीर उठाकर खमीरा तमाखु बनाते हैं। इत्यादिक वस्तु भी चलित रस में हैं।

22. मक्खन दही से या दूध से निकल कर अलहदे कर के खाना अभक्ष्य है दही में मिला हुआ जैसे दही का अधरिडका पीना यह अभक्ष्य नहीं । इति

अथ कुछ जैन धर्म के शब्दों का मतलब -

अब हम बालकों को कुछ जैन धर्म के शब्दों का मतलब समझाते है क्योंकि अनेक जैनी ऐसे हैं, अपने धर्म में हर रोज बोलने में आने वाले जो अनेक शब्द न तो उनका मतलब वह आप समझते हैं और यदि कोई अन्य मती उनसे उनका

मतलब (अर्थ) पूछे न उस को बता सकते हैं इसलिये हम बच्चों को यहां समझाते हैं, कि हे बालको यदि तुमसे कोई यह पूछे कि तुम कौन हो तो तुम अग्रवाल, पल्लीवाल, खंडेलवाल, वाकलीवाल, लमचू, हुमड़ सोनी आदि अपनी जाति या गौत्र का नाम मत लो, सिरफ कहो जैनी।

जैनी किसको कहते हैं

जो जैन धर्म को पाले (माने)

जैन धर्म किस को कहते हैं।

जिनका उपदेशा जो धर्म वह जन धर्म कहलाता है।

जिन किस को कहते हैं।

जो कर्म शत्रु को जीते।

श्रावगी और जैनी में क्या फरक है।

एक ही बात है चाहे श्रावक कहो चाहे जैनी ।

श्रावक शब्द का क्या मतलब।

सर्व का ज्ञाता सर्व का जानने वाला जो सर्वज्ञ उसके मानने वाला उसके धर्म में प्रवर्त्त करने वाला सो श्रावक कहलाता है।

जैनियों में कितने फिरके (थोक) हैं।

जैनियों में बड़े थोक दो है एक दिगाम्बरी दूसरे श्वेताम्बरी।

श्वेताम्बरी किन को कहते है।

श्वेत नाम है सुफैद का, अम्बर नाम है कपड़े का, सो सुफैद कपड़े वाले इसका अर्थ है अर्थात उन के साधु श्वेत वस्त्र रखते हैं, सुरख, पेला वगैरा रंगदार नहीं रखते उन श्वताम्बर साधुवों के मानने वाले श्वेताम्बरी कहलाते हैं।

दिगम्बरी किनको कहते हैं ।

इसके दो अर्थ है अनेक जैनी तो इसका अर्थ इस प्रकार करते है कि दिग दिशा

को कहते हैं अम्बर नाम है कपड़े का, अर्थात दिशा ही है कपड़े जिसके यानि जिस के पास कोई कपड़ा नहीं बिलकुल नग्न हो उस को दिगम्बर कहते हैं।

परन्तु बाबू ज्ञानचंद जैनी लाहौर निवासी इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं कि दि (पकम) (तरफ) को कहते हैं अंबर नाम है आसमान का अर्थात हर तरफ यानि चारों तरफ है आसमान जिन के भावार्थ सिवाय आसमान के और उनके बदन के हर तरफ कपड़ा जेवर, घास, कुसा, शक्कर, पड़दा, मकान, (गृह) वगैरा कुछ भी नहीं यानि जो गृह त्यागी जंगलों, बियाबान, बनों में खुली जगह में बसने वाले बिलकुल नग्न हो उनको दिगम्बर कहते हैं सो दिगम्बर साधुवों के मानने वाले दिगम्बरी कहलाते है।

श्वेतांबरियों में कितने थोक है।

श्वेतांबरियों में दो थोक है एक साधु पंथी उनको थानक पन्थी या ढूंढ़िये भी कहते हैं वह साधुवों को मानते हैं मंदिर प्रतिमा को नहीं मानते हैं दूसरे पुजेरे (मंदिरमार्गी) कहलाते हैं यह मंदिर प्रतिमा को भी मानते हैं साधुओं को भी मानते हैं, ढडियों के शास्त्र साधु अलग हैं पुजेरों के शास्त्र साधु अलग है।

ढूंढिये किसको कहते हैं

जो ढूढे तलाश करे कि मैं क्या वस्तु हूं मेरा क्या स्वरूप है मेरा इस संसार म क्या कर्तव्य है मेरी नजात किस तरह होगी ईश्वर का क्या रूप है उसका ध्यान कैसे करूं जो इस प्रकार की अपनी नजात (मुक्ति) की बातों को ढूंढे तलाश करे उसे ढूढिया कहते हैं।

पुजेरे किस को कहते हैं।

जो प्रतिबिम्ब को पूजे वह पूजेरे कहलाते हैं चूकिं ढूंढिये प्रतिमा का न मानते न पूजते इस वास्ते ढूंढियों के वर खिलाफ प्रतिमा को पजने वाले जो दूसरे थोक वाले हैं वह पूजेरे कहलाते हैं।

भावड़े किन को कहते हैं।

पंजाब में श्वेतांम्बरी जैनियों को भावडे कहते है।

भावड़े का क्या मतलब ?

पहले पंजाब में जैनी नहीं थे जब राजपूताने में जैनियों पर सखती हुई तब वहां से जहां तहां चले गये कुछ पंजाब में भी आकर बसे सो पहले जमाने के जैनी बड़े धर्मात्मा थे हर रोज अपना नित्य नियम करना भगवान का पूजन करना जीव दया पालना कीड़ों भी मरने से बचानी महा दयावान महा क्षमावान महाशांत परणामी सत्य बोलने वाले मांस शराब वगैरा अभक्ष्य के त्यागी छल छिद्र न करने वाले थे जब पंजाब के आदमियों ने इन का ऐसा चलन देखा पंजा के आदमी बड़े सीधे थे सब ने यह कहा इनके ईश्वर की भक्ति अपने धर्म नियम में भाव बढ़े हुये हैं सब यही कहते थे कि इन के भाव बढ़े हुये हैं सो वह शब्द बिगड़ कर भावड़े बन गया सो यह संसारी जीव धन दौलत कुटंब की मुहबत में उलझे हुये हैं इससे निकल कर जिसके भाव बढ जावें तरक्की पा जावे शुद्ध हो जाने की यादगार में लग जावें सो भावडे कहलाते हैं।

दिगम्बरियां में कितने थोक हैं।

दिगम्बरियों में पहले तीन थोक थे अब चार हो गये हैं 1. तेरह पंथी 2. बीस पंथी, 3 समैया जैनी 4. शुद्धआम्नाय।

13. पंथी किसको कहते हैं।

पांच महाव्रत पांच समिति तीन गुप्ति इन तेरह प्रकार के चारित्र पालने वाले जो दिगम्बर महामुनि उनके पैरोकार (मानने वाले) जो श्रावक वह तेरहपंथी कहलाते हैं।

बीस पंथी किसको कहते हैं।

बीस पंथी की बाबत सोम प्रभ आचार्य ने ऐसा लिखा है - भक्तिंतीर्थकरे गुरौ जिनमते संघे च हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहाद्युपरमं